तॅहक़ीक़े ईमाने

अबू तालिब رضی اللہ عنہ

मुसन्निफ़

इमामुल मनातिक़ा उस्ताज़ुल अरब वल-अजम मलिकुल मुदर्रिसीन

हज़रत अल्लामा अता मुहम्मद बंदियालवी चिश्ती गोलड़वी رحمۃ اللہ علیہ

हिन्दी लिपियांतर

डॉ. शॅहज़ादहुसैन क़ाज़ी

मैं परवरदिगारे आलम की पनाह चाहता हूं,
हर उस शख़्स से जो हम पर बुराई का ईल्ज़ाम लगाए,
बातिल और ना हक़ पर इसरार करें

-सय्यिदिना अबू तालिब इब्ने अब्दुल मुत्तलिब رضی اللہ عنہ

(क़सुरी फी सय्यिदिना अबू तालिब رضی اللہ عنہ /93, दिवान अबी तालिब رضی اللہ عنہ 'अम्मुन्नबी ﷺ'/64,
दिवान अबी तालिब बिन अब्दुल मुत्तलीब رضی اللہ عنہ /191)

तेह्क़ीक़े ईमाने
अबू तालिब رضی اللہ عنہ

: मुसन्निफ़ :

इमामुल मनातिक़ा उस्ताज़ुल अरब वल अजम मलिकुल मुदर्रिसीन
हज़रत अल्लामा अता मुहम्मद बंदियालवी चिश्ती गोलड़वी رحمۃ اللہ علیہ

: हिन्दी लिपियांतर :
डॉ. शेहज़ादहुसैन क़ाज़ी

किताब का नाम : तेहक़ीक़े ईमाने
अबू तालिब رضی اللہ عنہ

मु'अल्लफ़ : हज़रत अल्लामा अता मुहम्मद बंदियालवी चिश्ती गोलड़वी رحمۃ اللہ علیہ

हिन्दी लिपियांतर : डो. शेहज़ाद हुसैन क़ाज़ी
फाउन्डर एन्ड चेरमेन
ईमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नह),
मोडासा, अरवल्ली, गुजरात, भारत

सफहात : 76

सन इशाअत : नवम्बर, 2018 (हिजरी 1440, रबीउल अव्वल)

कम्पोसिंग/प्रिंटिंग: ईमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नह),
मोडासा, अरवल्ली, गुजरात, भारत

हदिया : अल्लाह عزوجل और रसूलल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم की बारगाह में क़बूलियत की दुआओं का तलबगार क्यूंकि अल्लाह عزوجل और रसूलल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ज़ियादा ह़क़दार है कि उन्हें राज़ी करें

मिलने का पता

ईमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन
(अहले सुन्नह)

डो. शेहज़ादहुसैन क़ाज़ी
मोडासा, अरवल्ली (गुजरात)
Contact No : 85110 21786

अर्जे नाशिर

अल्लाह ﷻ के नाम से शुरु के जो बड़ा महरबान बख़्शनेवाला, रहम फ़रमानेवाला है । सबसे पेहले शुक्र अदा करता हूं उस वहदहु ला शरीक़ का जिसने उसके रसूले मक़्बूल, अहमदे मुजतबा सय्यिदना मुहम्मदुर्रसूलल्लाह ﷺ व अह्ले बैते अत्हार عليهم السلام के सदक़े तुफ़ैल मुझ जैसे गुनहगार से कुछ काम लिया कि जिससे अल्लाह ﷻ और उसके रसूल ﷺ राज़ी हो।

रसूलेपाक के गमख़्वार है हज़्रत अबू तालिब رضي الله عنه
करारे हैदरे कर्रार رضي الله عنه है हज़्रत अबू तालिब رضي الله عنه
वफा देखो ये साइम कर दिया ईमान भी कुरबान
वफा के नूर का मीनार है हज़्रत अबू तालिब رضي الله عنه

अज- अल्लामा साइम चिश्ती

मौजूदा हालात किसी से छिपे नहीं है। ईन हालात में जहां उम्मत कई मुआमलात में गिरफ्तार है, वही कुछ ऐसे मसअले भी दरपेश आ रहे है जहां अह्ले सुन्नत का मौक़िफ़ कुरआनो-हदीस की रोशनी में उम्मत तक पहुंचाया जाना जरुरी है ताकि लोग हक़ को जान लें।

मुझ जैसे हक़ीरो गुनहगार की कोई औक़ात नहीं है कि ऐसे मसअलो में दख़्ल दे मगर अह्ले सुन्नत के नामवर उलमा-ए-किराम की तेहक़ीक़ को उम्मते रसूलल्लाह ﷺ तक पहुंचाने की क़ोशिश जरुर करना चाहता हूं। **'ईमाने अबू तालिब** رضي الله عنه**'** पर जो मौजूदा हालात बने है उस पर **'इमामुल मनातिका हज़्रत अल्लामा अता मुहम्मद बंदियालवी चिश्ती गोलड़वी** رحمة الله عليه**'** की तेहक़ीक़ जो एक उर्दू रिसाले की शक्ल में थी उसका हिन्दी लिपियांतर कर के उम्मत तक हक पहुंचाने की जो

क़ाविश मैंने की है अल्लाह ﷻ ईसे क़बूल फ़रमाए। ईस पूरे काममें मेरी मदद पर हमेशा तैयार रहनेवाले दीवान मोहसीनशाह हबीबशाह (सांसरोद, गुजरात) का तहे दिल से शुक्रगुज़ार हूं। मौजूदा हालात में ईस किताब की ज़रुरत पर हमारी शुरु से होंसला अफ़ज़ाई करनेवाले खतीबे अह्ले बैत जनाब मुफ्ती शफ़ीक़ हनफ़ी कादरी साहब (मुम्बई) का शुक्रगुज़ार हूं।

ईस किताब के उर्दू अल्फ़ाज़ो को मैंने कई जगह ब्रेकेट() में अंग्रेजी या हिन्दी में अनुवाद करके समज़ाने की कोशिश की है मगर ज़्यादातर अल्फ़ाज़ो को उनकी सेह्हत के मुताबिक़ उर्दू ही रख् कर सिर्फ लिपियांतर किया है। अगर ईसमें किसी किस्म की कोई गलती वाक़ेअ हो गई हो तो मैं तमाम क़ारेईन से ईल्तेमास करता हूं कि वो मेरी इस्लाह फ़रमाअेंगे न कि किताब के तआल्लुक़ से बाते मुश्तहिर करके किताब कि अहम्मिय्यत घटाएंगे। क्यूंकि 'ईन्सान खता का पूतला है।'

ईस किताब को ईसी उम्मीद के साथ पब्लिश कर रहा हूं कि ये किताब अल्लाह ﷻ और उसके रसूल मदनी आका, नाना-ए-हसनैन رضی اللہ عنہم, सय्यिदना मुहम्मद मुस्तफा ﷺ की खुशनुदी का बाईस हो और कल रोज़े क़ियामत मुज़ गुनाहगार को उनकी शफ़ाअत हासिल हो।

आमीन या रब्बल आलमीन

डो. शेहज़ादहुसैन क़ाज़ी

5 रबीउल अव्वल, हि. 1440

14 नवेम्बर, 2018

फेहरिस्त

तआरुफ़े मुसन्निफ़

उलूमे दीनीया की अज़्मतों के अमीन, दर्से निज़ामी के रिफ़अतों के पासबान अल्लामा अता मुह़म्मद बंदियालवी رحمة الله عليه की ज़ात किसी तआरुफ़ की मोहताज नहीं, आप अवान (सय्यिदिना अब्बास अलमबरदार رضي الله عنه से मनसूब) कौम के एक मुतवास्सित ज़मीनदार घराने से तआल्लुक़ रखते थे, इब्दायु अल-मुखलिसीन और नबी करीम صلى الله عليه وآله وسلم के सच्चे गुलामों में से थे, उन की इस्लामी खिदमते जलीला की बिना पर उन्हें रुस्दो हिदायत का मीनार और अपने वक़्त में इस्लाम काम मज़्बूत सुतून कहा जाए तो मुबालगा ना होगा। आप की विलादत 1916 ईसवी और वफ़ात 21 फरवरी, 1999 ईसवी को हुई।

आपके असातेज़ा में फक़ीह अल असर् अल्लामा यार मुह़म्मद बंदियालवी, अल्लामा हिदायतुल्लाह खान जौनपुरी, उस्ताज़ुल असातिज़ा अल्लामा मेहर मुहम्मद अछारवी क़ाबिले ज़िक्र हैं। ज़मान-ए-तिफ़ली में ही खिज़्रे ज़माना, रईस अल मुजद्दिदिन पीर सय्यिद मेहर अ़ली शाह गोलड़वी رحمة الله عليه के दस्ते ह़क परस्त पर बैअत हो गये और फैज़ाने क़ादरीयत ओ चिश्तीयत से मालामाल हुए !

आप उलमा-ए-ह़क की सच्ची यादगार थे.... अस्लाफ का नमूना थे.... बिलाशुबा बेहरुल-उलुम-ओ मजमा उल-कमालात थे.... कौल ओ फेल के तज़ाद से कोसो दूर थे.... इख्लासो लिल्लाहियत के खरे थे.... इस बात को पसंद नहि फरमाते थे कि आप की आमद पर हर कोई खड़ा हो या तलबा उनकी दस्त-बोसी करे...... येह अलग बात है कि आलमी मुबल्लिगे इस्लाम अल्लामा शाह अहमद नूरानी को उनके हाथों को बोसा लेते हुए देखा गया था और जब आप को आखिरी गुस्ल दिया गया तो पैकरे इल्म-ओ-अमल अल्लामा मुहम्मद अब्द अल ह़क बंदियालवी ने उनके पांओ को बोसा दिया।

ता-हयात जमीयत अल-उलमा पाकिस्तान के नाइबे सदर के ओहदे पर फाइज़ रहे और नज़रीयाती काउन्सिल के मेम्बर भी रहे, ख़िताब में ऐसा असर था के मालिक फज़ल अल रहमान बंदियालवी जैसे कट्टर देवबंदी ने जब आप की मजालिस में शिर्कत की और अह्ले सुन्नत के अक़ाइद पर दलाइल-ओ बराहीन से पुर ख़िताब सुना तो अपने अक़ाइदे बातिला से ताइब हो कर सुन्नी सहीहुल अक़ीदा हो गए।

अकाबिरीने अह्ले सुन्नत से हद दरजा अकीदत-ओ महब्बत रखते थे एक दफ़ा मुजद्दिदे अरब-ओ-अजम अल्लामा इस्माईल नबहानी की किताब 'जवाहिर अल बिहार' का तज़किरा चला तो फ़रमाने लगे कि : "अरबी में अल्लामा नबहानी, फारसी में शैख़ मुहक़्क़िक़ अब्दुल ह़क्क मुहद्दिष दहेलवी और उर्दू में आ़ला हज़रत मुहद्दिष बरेल्वी एक ही रंग मे रंगे हुए थे, इन हज़रात ने शाने रिसालत की अज़्मत को खूब खूब बयान किया है। आप आ़ला हज़रत से गेहरी अक़ीदत ओ मुहब्बत रखते थे।"

इन तमाम खूबियों के साथ जो खूबी आप में बा-दरजा अताम मौजूद थी वोह येह के आप एक बा-सलाहियत, माहिर और शफ़ीक उस्ताज़ भी थे, आप के कामयाबतरीन शागिर्दों को देखकर हज़रत मौलाना शाह मुहम्मद आरिफुल्लाह कादिरी ने फ़रमाया था कि बंदियाल में इल्म पढ़ाया नहि जाता पिलाया जाता है।

आप ने दर्से निज़ामी को एक नई ज़िन्दगी अता की। आपने मुहक़्क़िक़ उलमा, नामवर मुदर्रिसीन, फुक़हा और मुहद्दिसीन की कई जमाअते तय्यार की, आप के अन्दाज़े तदरीस ने मिल्लत को बेशबाहा चमकते हीरे अता किये उन में चंद मशाहीर के नाम दर्जे ज़ैल है :

- शैख़ अल हदीष अल्लामा गुलाम रसूल रज़वी
- शैख़ अल हदीष अल्लामा गुलाम रसूल सईदी
  (शारेह बुख़ारी-ओ मुस्लिम, मुफस्सिरे कुरआन)

- शैख़ अल हदीष अल्लामा मुहम्मद अशरफ सियालवी
  (साहिबे तसानीफ़े कासीराह)
- शैख़ अल हदीष अल्लामा मुहम्मद अब्द अल हाकीम शरफ कादरी
  (मुतरजिम कुतुबे अकाबिरीन व मुसन्निफे तसानीके कासीराह)
- अल्लामा फज़्ल सुब्हान कादरी (मरदान)
- अल्लामा पीर मुहम्मद चिश्ती (पेशावर)
- डोक्टर आसिफ जलाली (लाहोर)
- ज़िया अल-उम्मत पीर मुहम्मद करम शाह अल अज़्हरी
  (ज़िया अल नबी, सीरत अल रसूल ﷺ पर जामे किताब)
- अल्लामा अल्लाह बख़्श चिश्ती (मियांवाली)
- ख़्वाजा मुह़म्मद हामिद अल दीन सियालवी
  (सज्जादानशीन सियाल शरीफ)
- शाह अब्द अल ह़क्क साहिब (सज्जादानशीन गोलड़ा शरीफ)
- अल्लामा सय्यिद महमूद अहमद रज़्वी (शारेह बुख़ारी)

चूं कि आप ने अपनी उम्र का अकसरो बेशतर हिस्सा पळहाने और पळहने में गुज़ार दिया, इस वजह से आप की तसानीफ ज़ियादा नहि है। मगर बर-वक़्त कुछ अहम और हस्सास मसाइल पर आप ने कुछ किताबे तस्नीफ फ़रमाई है जो दर्जे जैल है :

- रुयते हिलाल की शरई तेहक़ीक़
- सैफ अल-अता अला अनक़ मिन तग़ा
- अकीदा-ए-अह्ले सुन्नत
- कव्वाली की शरइ हैसियत
- इमामते कुबरा और उस की शराइत
- इस्लाम में औरत की हुक्मरानी
- तेहक़ीक़े ईमाने अबू तालिब رضی اللہ عنہ (इस वक्त आपके हाथों में है)
- सफरे बग़दाद

- सर्फ़े अताई (मन्ज़ूम)
- तेहक़ीक़ वक़्ते इफ्तार
- कदमे गौषे आज़म رضی اللہ عنہ और फज़ाइले अहले बैत علیہم السلام
- अल तेहक़ीक़ अल फ़रीद
- अज़ान से कब्ल और बाद दुरुद शरीफ़ का हुक्म
- मसअला-ए-सूद
- माहे सियाम और बा-जमाअत नमाज़े वितर्
- सियाह खिज़ाब
- जिहाद की अहमीयात
- मसअला-ए नूर-ओ बशर
- मसअला-ए इल्मे ग़ैबे नबी صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم
- तसवीर (या'नी फोटो) की शरई हेसियत
- शाने विलायत

अलहम्दुलिल्लाह के ज़ेरे नज़र किताब **'तेहक़ीक़े इमाने अबू तालिब** رضی اللہ عنہ**'** ख़्वाजा अता मुहम्मद बंदियालवी رحمۃ اللہ علیہ की गिरांकद्र तेहक़ीक़ात में से एक चश्मकुशा तेहक़ीक़ है, जिस मे मुसन्निफ رحمۃ اللہ علیہ ने जनाबे अबू तालिब رضی اللہ عنہ के साहिबे ईमान होने की तेहक़ीक़ फ़रमाई है, और काईलाने कुफ्र के दलाइल को इल्मी व तेहक़ीक़ी तरीके से रद्द फ़रमाते हुए ईमाने अबू तालिब رضی اللہ عنہ पर वाहिद होने वाले एतेराज़ात का इल्मी तेहक़ीक़ी और उसूली रद्द फ़रमाया है। ये किताब अव्वलीन अल्लामा साइम चिश्ती رحمۃ اللہ علیہ की किताब **'उयून अल मताृलिब'** पर एक मुक़द्दिमा थी, इस की जामीईयत-ओ-अक़ादियत के पेशे नज़र बाद में मजीद अज़ाफ़ा के साथ किताबी शक्ल में शाये की गई।

इमाम जा'फ़र सादिक फाउन्डेशन के अराक़ीन ने मौजूदा हालात के पेशे नज़र इस किताब के मुख़्तसर अम-फेह्म और जामेअ होने के सबब

हिन्दी और रोमन उर्दू ज़बान में तरजमा शाये करने का अज़्म किया ता के **ईमाने अबू तालिब** ﵁ **के मुता'ल्लिक अपना अक़ीदा और औलिया अल्लाह, मुहक्क़िक़ाने अह्ले सुन्नत और काईलीने ईमाने सय्यिदिना अबू तालिब** ﵁ **मसलन....**

◈ ख्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया ﵀

◈ मीर अब्द अल वाहिद बिलगिरामी ﵀

◈ क़ाज़ी सय्यिद दहलान मक्की ﵀

◈ इमाम मुहम्मद बिन रसूल बरज़न्जी ﵀

◈ अल्लामा बरखुरदार मुल्तानी ﵀

◈ पीर करम शाह अल अज़हरी ﵀

◈ ख्वाजा कमरुद्दीन सियालवी ﵀....वग़ैराहुम की तेहक़ीक़ात को अवामुन्नास के सामने पेश किया जा सके। अल्लाह ﷻ इन के होंसलो को बुलन्दी अता फरमाये....... आमीन

आखिर में फी ज़मानाह मुन्किरीने ईमाने सय्यिदिना अबू तालिब ﵁ से क़ाइलीने ईमाने सय्यिदिना अबू तालिब ﵁ का ये मुख़्लिसाना व मुअद्दबाना मश्वरा है कि जो हज़रत सय्यिदिना अबू तालिब ﵁ के ईमान के काइल नहीं, उन पर भी लाज़िम है के वोह रसूलल्लाह ﷺ की नुसरत ओ हिमायत की बिना पर अबू तालिब ﵁ से मुहब्बत करे।

खाक पाए अह्ले बैत ﵈

अबू अल-दानियाल मुहम्मद शफ़ीक

हनफ़ी अल कादरी

फरमुदा-ए-हज़रत उस्ताजुल उलमा

अल्लामा अता मुहम्मद बंदियालवी चिश्ती गोलड़वी رحمۃ اللہ علیہ

बंदा ने यह मज़मून इस उम्मीद पर लिखा है की जब आँहज़रत ﷺ इस फ़क़ीर सरापा तक़सीर के आमाल मुलाहज़ा फ़रमाएंगे तो हो सकता है कि ये मज़मून आप ﷺ की खुशनुदी का बाइस हो और अल्लाह سبحانہ وتعالیٰ इस फ़क़ीर के गुनाह मुआफ़ कर दे और ख़ातिमा ईमान पर हो जाए।

आमीन या रब्बल आलमीन

अल्लामा बंदियालवी رحمۃ اللہ علیہ

मीलादुन्नबी ﷺ

लिए ज़िंदगी का पैग़ाम आ गए हैं,
मुबारक हो खै़रुल अनाम आ गए हैं।

तबाही से इंसानियत को बचाने,
ख़ुद इंसानियत के इमाम आ गए हैं।

मिटाने जिहालत की तारीकियों को,
रिसालत के माहे तमाम आ गए हैं।

ग़रीबों, ज़ईफ़ों, यतीमों को मुज़्दा,
कि सर चश्मे फ़ैज़े आम आ गए हैं।

तहय्या है फ़ारान की चोटियों को,
यह कौन आज बाला-ए-बाम आ गए हैं।

अता करने बिगड़े मय-कशों को,
हिदायत का लबरेज़ जाम आ गए हैं।

तसव्वुर का आलम भी कितना हसीन है,
मदीने के दीवारो-बाम आ गए हैं।

हर एक शय पे है आलम कैफ़ियत तारी,
यह गर्दिश में किस शय के जाम आ गए हैं।

रसाई हुई उनके क़दमों तक 'असलम',
अक़ीदत के जज़्बात काम आ गए हैं।

मन्क़बत

ब-हूज़ुरे सय्यिदिना अबू तालिब इब्न जनाबे अब्दुल मुत्तलिब

अम्मे हजरत रिसालत मआब ﷺ

नज़रे मेहबुबे ख़ुदा, जाने अबू तालिब है,
सारी दुनिया पे ये एहसाने अबू तालिब है।

अल्लाह अल्लाह ! अजब शाने अबू तालिब है,
हरमे काबा, अदब-दाने अबू तालिब है।

मुसहफ़े रुए मुहम्मद ﷺ है नज़र में हर दम,
मरहबा, ख़ुब ये कुराने अबू तालिब है।

ईन के आगोश की ज़ीनत हैं अली शेरे ख़ुदा,
नूरे अहमद तहे दामने अबू तालिब है ।

एहतेराम इन का फिरिश्तों की सफों में भी हुवा,
जिस को देखो वोह सना ख़्वाने अबू तालिब है।

मुरतज़ा हों के हों सिब्तैन, सभी प्यारे हैं,
हर किरन, शम-ए-शबिस्ताने अबू तालिब है।

उल्फते पंजतने पाक ने बख़्शा ये शरफ,
आज कल दिल मेरा मेहमाने अबू तालिब है।

चश्मे बेदार मिली, मा'रेफत आगाह नज़र,
दर्से ह़क्क ख़ुत़्बाए इरफाने अबू तालिब ﷺ है।

मैं दिलो जान से हूं मद्दाह, अबू तालिब ﷺ का,
जो नफ्स है, वोही कुरबाने अबू तालिब ﷺ है।

हर गुले तर पे निछावर है फलक के तारे,
पुरबहार ऐसा, गुलिस्ताने अबू तालिब ﷺ है।

काबिले रश्क है अन्दाज अबू तालिब ﷺ के,
ह़क्क का इरफान ही विजदाने अबू तालिब ﷺ है।

मैं कहूंगा के है मेहरुम बडी ने'मत से,
जो कोई दस्त-काशे ख़्वाने अबू तालिब ﷺ है।

बादे तेहकीके अहादीसो रिवायात 'नसीर'!
मेरा दिल काईले इमाने अबू तालिब ﷺ है।

अज - आले रसूल, औलादे बतूल, फख़्रे सादात, नाइबे ताजदारे गोलड़ा,
हजरत पीर सय्यिद नसीरुद्दिन नसीर जीलानी, गोलड़वी رحمۃ اللہ علیہ

बाब अव्वल

तमहीदी मुक़द्दमात

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

الحمدلله وحده والصلوٰة والسلام علیٰ من لانبی بعده وعلیٰ آله واصحابه و ازواجه واولیاء امته اجمعین اما بعد

हदीस शरीफ़ में वारिद है कि अल्लाह ﷻ की येह सुन्नते जारिया है कि दुनिया में वक़्फ़ा-वक़्फ़ा से ऐसे उलमा-ए-किराम पैदा फ़रमाता रहेगा जो कि उलमा-ए-सू की तावीलाते बातिला और मुब्तिलीन के मज़ऊमाते फ़ासिदा से मुसलमानों को मुतनब्बे फ़रमाते रहेंगे और जितना ज़माना-ए-नबुवत अला साहिबाहुस्सलातु वस्सलाम के बाद और क़ुर्बे क़यामत होगा उतना ही तावीलाते ज़ाएग़ा और इतिक़ादाते फासिदा की कसरत होगी ता-आँकि क़यामत उस वक़्त क़ाइम होगी जब ज़मीन पर अल्लाह अल्लाह कहने वाला कोई न होगा। लेकिन अल्लाह ﷻ भी उस दौरान अपनी सुन्नत जारी फ़रमाता रहेगा और उलमा-ए-ज़ोर के मुक़ाबला में उलमा-ए-सिद्क़ पैदा फ़रमाता रहेगा चुनाँचे तारीख़-दाँ हज़रात पर वाज़ेह है कि हर दौर में सालिहीन ने मुब्तिलीन का रद्द फ़रमाया और दीन की तजदीद फ़रमाई इसी सिलसिला की कड़ी मेरे एक अज़ीज़ हज़रत मौलाना अल-अल्लामा जनाब साइम चिश्ती फ़ैसलाबादी हैं। साइम साहब की तीन तसानीफ़ बंदा की नज़र से गुज़री हैं।

अव्वल **ग्यारहवीं शरीफ़** है चूँकि मुब्तिलीन ने औलिया-ए-किराम के लिए ईसाले सवाब को ما اهل به لغیرالله में दाख़िल कर दिया और हलाले तय्यिब को हरामे क़त्तई में दाख़िल करने की साये ना-मश्कूर की

तो जनाब साइम साहब ने निहायत अछूते अंदाज़ में मुब्तिलीन का रद्दे बलीग़ फ़रमाया और किताबे मुस्तताब **'ग्यारहवीं शरीफ़'** तालीफ़ फ़रमाई जो काफ़ी मुद्दत हुई कि तबा हो कर हाथों-हाथ फ़रोख़्त हो चुकी है और अब दूसरे एडीशन में क़दम रख रही है।

दूसरी किताब **'शहीद इब्ने शहीद'** है कि बाज़ ख़वारिज ने हज़रत सय्यदुश्शोहदा इमामे मज़्लूम नबीरा-ए-ख़ातिमुल मुरसलीन ﷺ पर ज़बाने तान दराज़ की है और यज़ीदे अज़्लम अलैहि मा-अलैह को हक़ ब-जानिब साबित करने की मज़्मूम कोशिश की है। हज़रत साइम की हुब्बे अह्ले बैते किराम عليهم السلام की रग फर्की और किताबे मजकूरे बाला तस्नीफ फरमाकर ख़वारिज का दन्दान सि़कन रद्दे बलीग़ फ़रमाया और हिमायत और ताईदे अह्ले बैत عليهم السلام की सआदत से अल्लाह تعالیٰ ने साइम साहब को सरफ़राज़ फ़रमाया, हालाँ कि पाकिस्तान में मुशाहीरे उलमा-ए-अह्ले सुन्नत मौजूद हैं। अल्लाह تعالیٰ की देन है (ई सआदत ब-ज़ोरे बाज़ू नीस्त ता न-बख़्शद ख़ुदा-ए-बख़्शंदा)

तीसरी किताब हज़रत मौलाना साइम चिश्ती ने **'हज़रत अबू तालिब** رضي الله عنه **अम्मुन्नबी** ﷺ **के ईमान के मुता'ल्लिक तहरीर फरमाई है।'** इस किताब का मज़्मुन और मौज़ु एक निहायत नाज़ुक मसअला है जिस पर क़लम उठाना हर किसी का काम नहीं है बल्कि नाम-वर उल्मा का काम है।

मुसन्निफ फाज़िल ने इस मसअला की तेहक़ीक़ का हक़ अदा किया है कि अपनी वुसअते इल्मी और कसरते मालुमात का सुबूत मुहय्या फर्मा कर अह्ले इल्म पर बड़ा एहसान फरमाया है इस फक़ीरे मेहरान सुतूर-खादिमुत्तल्बा अता मुहम्मद चिश्ती गोलड़वी ने जनाब साइम साहब की किताब **'ग्यारहवीं शरीफ'** पर मुख्तसर तक़रीज़(Favorable Criticism)(**अनुकूल टीका**) तेहरीर की है जो शायद किताब की दुसरी

ताब में शाए होगी इस मक़ाम में ये फक़ीरे सरापा तक़सीर मौलाना साइम साहब की तीसरी तसनीफ पर तब्सिरा करना चाहता हैं जिस में हज़रत अबू तालिब ﷺ के ईमान पर मुहक्क़िक़ाना बहस की गई है अगरचे तब्सिरा (Review) (टिप्पणी) और तक़रीज़ (Favorable Criticism) (अनुकूल टीका) इख्तिसार की मुतक़ाज़ी (Desire) है लेकिन ज़ेरे तब्सिरा मसअला ऐसा दरिया है कि उसको कुज़े में बंद करना कम अज़ कम इस फक़ीर का मक़दूर नहीं है इसलिये अगर तब्सिरा में तवालत हो जाए तो बंदा क़ारईन से माज़रत-ख्वाह है। तब्सिरा से क़ब्ल चंद तमहीदी (Primary) (प्राथमिक) मुक़द्दमात पेशे खिदमत है ताकि मसअला समजने में आसानी हो।

◈ **मुक़द्दमा-ए-अव्वल** (1) :

इमान में दो चीज़े अहम है अव्वल तसदीक़ (Authentication) (प्रमाणीकरण) जिस्का त'आल्लुक दिल से है दुवम इकरार जिस का त'आल्लुक ज़बान से है। खुलासा हर दो चीज़ का ये है कि दिल तसलीम करे कि अल्लाह ﷻ वहदहु-ला-शरीक़ है और मुहम्मद मुस्तफा ﷺ सादिक़ और सच्चे हैं और ज़बान से इन हर दो अम्र का इक़रार किया जाए जिस का खुलासा لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ है।

◈ **मुक़द्दमा-ए-दुवम** (2) :

तसदीक़े क़ल्बी मुसलमान से कभी साक़ित (Void) (रद्द/शून्य) और मुआफ नहीं होती ख्वाह कितना ही उज़्र और खौफ शदीद क्यूँ न हो लेकिन इक़रार, उज़्र और अपनी जान के ख़तरा के वक़्त साक़ित और मुआफ़ है या'नी अगर तस्दीक़े क़ल्बी मौजुद और मोहकम है तो ज़बान पर कल्मा-ए-कुफ़्र जारी करने की अल्लाह ﷻ की तरफ़ से रुख़्सत है और इस की दलील क़ुरआन-पाक में मज़कूर है चुनाँचे फ़रमाने इलाही है :-

مَن كَفَرَ بِاللّٰهِ مِن بَعْدِ إيمَانِهِ إلاَّ مَنْ أُكْرِهَ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالإِيمَانِ وَلَـٰكِن مَّن شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللّٰهِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ۔

ख़ुलासा मुक़दमा दुवम का यह है कि अगर तसदीक़ क़ल्बी है तो ज़बान पर सरीह कुफ़्र मुनाफ़ी-ए-ईमान नहीं है और इसमें किसी को इख़्तिलाफ़ नहीं है तो इससे यह साबित हो जाएगा कि अगर तसदीक़े क़ल्बी मौजूद है तो ज़बान पर ऐसे कलिमात जारी करना जो कुफ़्रे सरीह (स्पष्ट कुफ़्र) नहीं बल्कि दो माना का इहतिमाल (Possibility) (संभावना) रखते हैं। या'नी कुफ़्री और ग़ैर-कुफ़्री तो ऐसे कलमात का इजरा ज़बान पर जान के ख़ौफ़ के वक़्त ब-तरीक़े ऊला मुनाफ़ी-ए-ईमान नहीं है और इसमें भी किसी ज़ी-इल्म को इख़्तिलाफ़ नहीं हो सकता।

◈ **मुक़द्दमा सोयम (3) :**

जब अपनी जान को ख़तरा लाहिक़ हो तो ज़बान पर इजरा-ए-कलमाते कुफ़्र मुनाफ़ी-ए-ईमान नहीं है तो अगर अपनी जान के साथ नबी ﷺ की जान को भी शदीद ख़तरा लाहिक़ हो तो ज़बान पर इजरा-ए-कलिमाते कुफ़्र या इजरा-ए-कलिमाते मोहतमिला ब-तरीक़े ऊला मुनाफ़ी-ए-ईमान नहीं होगा।

◈ **मुक़द्दमा चहारुम (4) :**

कुफ़्र की कई सूरतें हैं। अव्वल दिल में तसदीक़ नहीं है अगर्चे ज़बान पर इक़रार है, दुवम बिला उज़्र और इकराह ज़बान पर इजरा-ए-कलमा-ए-कुफ़्र, सोयम ऐसा फेल करना जो कि कुफ़्र और तकज़ीब पर दलालत करे और कोई जब्र और इकराह नहीं है जैसे बुत को सजदा करना या नबी عليه الصلوٰة والسلام को अल्लाह سبحانه وتعالى की इबादत से रोकना।

◈ **मुक़द्दमा पंजुम (5) :**

ईमान और कुफ़्र के दलाइल ब-ज़ाहिर मुत'आरिज़ (Conflicting) (परस्पर विरोधी) हों तो ईमान के दलाइल को तरजीह (Prefer) (पसंद) होगी अगर्चे दलाइले ईमान ज़ईफ़ ही क्यूँ न हो और उसकी तसरीह कुतुबे फ़िक़्ह में है। الإسلام يعلو ولا يُعلىٰ या'नी इस्लाम कुफ़्र पर ग़ालिब है मग़्लूब नहीं है।

इब्तिदा में अर्ज़ है कि अल्लाह ﷻ ने हर दौर में ऐसे उलमा को पैदा फ़रमाया जिन्होंने हक़ को ज़ाहिर फ़रमाया और तावीलाते बातिला का इब्ताल फ़रमाया मसअला ईमाने हज़रत अबी तालिब رضی اللہ عنہ भी एक इख़्तिलाफी मसअला है और क़दीमन हदीसन उलमा-ए-किराम ने इस मसअला में किताबें और रसाइल तहरीर फ़रमाए इस फ़क़ीर की मालूमात के मुताबिक़ माज़ी-ए-क़रीब(नजदीक के भूतकाल में) में मौलाना अल-अल्लामा मुहम्मद बिन रसूल बरज़ंजी رحمۃ اللہ علیہ ने ईमाने अबी तालिब رضی اللہ عنہ पर एक रिसाला तहरीर फ़रमाया और ईमाने अबी तालिब رضی اللہ عنہ को दलाइले कसीरा से साबित फ़रमाया इस रिसाला में अल्लामा बरज़ंजी رحمۃ اللہ علیہ ने उन दलाइल से जिन से मुख़ालिफ़ीन ने अदमे ईमाने अबी तालिब رضی اللہ عنہ पर इस्तिदलाल (Argument) (दलील) किया था उन्हीं दलाइल से अल्लामा बरज़ंजी رحمۃ اللہ علیہ ने ईमाने अबी तालीब رضی اللہ عنہ साबित किया। "فللہ درہ"

अल्लामा बरज़ंजी رحمۃ اللہ علیہ की वफ़ात ग्यारह सो तीन हिजरी में (1103 हीजरी में) हुई इसके बाद इसी मसअला पर हज़रत अल्लामा सय्यिद अहमद बिन ज़ैनी दहलान मुफ़्ती अल-हरम رحمۃ اللہ علیہ ने रिसाला तहरीर फ़रमाया जिसका नाम **'असना अल मतालिब फी नजात अबी तालिब** رضی اللہ عنہ**'** है यह दोनों रिसाले अरबी ज़बान में हैं और दूसरा

रिसाला पेहले से माखूज़ है। और फिर बहुत ही माज़ी-ए-क़रीब में हज़रत मौलाना अल-अल्लामा मौलवी मुहम्मद बरखुर्दार मुल्तानी मोहश्शी-ए-निब्रास ने रिसाला **'असना अल मतालिब'** का उर्दू में तर्जुमा फ़रमाया और इसका नाम है। **'अल-क़ौलुल जली फी नजाति अम्मुन्नबी व अबी अ़ली'** और इसके बाद इस मौजू़ पर अल्लामा साइम चिश्ती की तस्नीफ़े मुनीफ़ है। अल्लाह ﷻ ज़ोरे क़लम ज़्यादा अता फ़रमाए।

◈ मुक़द्दमा शशुम (6) :

उलूमे दीनीया के कई शोबे हैं, तदरीस (Teaching), इफ्ता (Statement), क़ज़ा (Jurisdiction), तब्लीग़ (प्रचार), मुनाज़रा (Debate), तस्नीफ़ (Composition)-ओ-तालीफ़ (Compilation) और ज़ाहिर है कि एक आदमी येह सारे काम नहीं कर सकता, लिहाज़ा उलमा को यह तमाम काम बा-हम तक़सीम करने होंगे तो जब कोई साहिबे इल्म किसी एक काम को इख़्तियार फ़रमा कर सा'ये बलीग़ करता है तो इस फ़क़ीर को बड़ी ख़ुशी होती है कि इस आलिमे दीन को अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास है और यह कि इसने उलमा का हाथ बटाया है। इन छ तमहीदी मुक़द्दिमात के बाद बंदा मुख़्तसर तौर पर असली मक़सद बयान करता है। 'वलनी'म मा-क़ील' तमन्ना मुख़्तसर है मगर तमहिद तूलानी।

23
बाब दुवम
ईमाने अबू तालिब رضی اللہ عنہ के दलाइल

यहाँ हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ के ईमान पर दलाइल मुलाहिज़ा हों

दलीले अव्वल

(1)

हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ के कुतुबे तारिख़ में कई अशआर और खुत्बात मनक़ूल है जिनसे पता चलता है कि अबू तालिब رضی اللہ عنہ के दिल में तस्दीक बिन-नबुव्वत थी और उन्होने ज़बान से भी इक़रार किया है। यहाँ नमूना के तौर पर बाज़ अशआर और खुत्बात का ज़िक्र किया जाता है।

ولقد علمت بأن دين محمد
من خير أديانِ البرية دينا

या'नी **"मैं ने यक़ीनन जान लिया कि मुहम्मद صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم का दीन तमाम लोगों के दीन से अफ्ज़ल है।"**

ألم تعلموا أنا وجدنا محمدا
رسولا كموسى صح ذالک فى الكتب

या'नी **"तुम सब लोग जानते हो कि मुहम्मद صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم उसी तरह रसूल हैं जैसे मुसा علیہ السلام हैं और यह बत आसमानी किताबों से साबित है।"**

و شق له من اسمه ليجله
فذو العرش محمود و هذا محمد

या'नी **"अल्लाह ﷻ ने अपने इस्मे महमूद से आँहज़रत ﷺ का नाम मुश्ताक फ़रमाया है आँहज़रत ﷺ की इज़्ज़त-अफ्ज़ाई के लिये"** और यह शेर हज़रत हस्सान رضي الله عنه कि तरफ़ भी मनसूब है और इस सूरत में ये शेर मिन क़बीली तवारुद होगा।

अब खुतबात के चंद अल्फाज़ मुलाहज़ा हों हज़रत अबू तालिब رضي الله عنه ने क़ुरैश को वसीयत करते हुए फ़रमाया :

والله لكانى به وقد غلب ودانت له
العرب والعجم فلايسبقتكم اليه سائر
العرب فيككونوا اسعدبه منكم۔

या'नी **"मैं नूरे फिरासत से देख रहा हूँ कि आँहज़रत ﷺ गालिब है और अरबो-अजम उनका मुतीअ् है। ऐ क़ुरैश ! ऐसा न हो कि दुसरे अरब इस सआदते इमानी में तुम पर सबक़त ले जाएँ और वह ज़्यादा सआदत हासिल कर लें।"** या'नी "तुम क़ुरैश आप ﷺ के साथ सिर्फ ईमान ही न लाओ बल्कि इस्लाम और ईमान में सब्क़त और पहल करो।"

एक और खुत्बा में है :

يا معشر قريش كونوا له ولاة ولحزبه
حماة والله لايسلک احد سبيله الارشد
ولا يأخذ احد بهديه الاسعد۔

या'नी "ऐ क़ुरैश ! तुम आँहज़्रत ﷺ के मुहिब और आप ﷺ से क़रीब हो जाओ और आप ﷺ के गिरोह के मददगार बनो खुदा की कसम जो आप ﷺ का रस्ता इख्तियार करेगा वोह हिदायत पा गया और जो आप ﷺ की सीरत पर अमल करेगा वह नेक-बख़्त है।"

एक और खुत्बा के अल्फाज़ मुलाहज़ा हों :

لن تزالوا بخير ماسمعتم من محمد
وماتبعتم أمره فاطبعوه ترشدوا.

क़ुरैश को मुख़ातिब करते हुए फ़रमाया : **"जब तक तुम लोग मुहम्मद ﷺ की बात सुनोगे और आप ﷺ के अम्र और हुक्म की इत्तिबा करोगे तुम हमेशा भलाई और नेकी में रहोगे लिहाज़ा आप ﷺ की इताअत करो रहनुमाई पाओगे।"**

मज़्कूरा-बाला अशआर और खुत्बात अल्लामा बरज़ंजी رحمة الله عليه और सय्यिद अहमद ज़ैनी दहलान رحمة الله عليه ने अपने रसाइल में मुस्तनद तवारीख़ से नक़्ल फर्माए हैं और इन से पता चलता है कि हज़्रत अबी तालीब رضي الله عنه को आँहज़्रत ﷺ की नबुवत की तस्दीक़े क़ल्बी और इकरारे लिसानी दोनों हासिल थे और वोह ज़ाहिर और बातिन में मोमिन थे। मज़्कूरा-बाला दलील से हज़्रत अबू तालिब رضي الله عنه के अपने अक़्वाल से साबित होता है कि व मोमिने मुसद्दिक मुक़र्रर थे।

दलीले दुवम

(2)

अब दुसरी दलील मुलाहिज़ा हो कि आँहज़रत ﷺ का अपने चचा हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ के मुता'ल्लिक क्या अक़ीदा था।

इस दलील से ये अम्र साबित किया जाएगा कि आँहज़रत ﷺ अपने चचा अबू तालिब رضی اللہ عنہ को मुसलमान और मोमिन जानते थे। दलील ज़िक्र करने से क़ब्ल एक तफसील मुलाहज़ा हो ताकि दलील के समझने में आसानी पैदा हो हज़रत अब्दुल मुत्तलिब رضی اللہ عنہ के विसाल के बाद मक्का मुकर्रमा में सख्त कहत पड़ा अह्ले मक्का ने हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ से बारिश के लिये दुआ की इल्तेमास की तो हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ आँहज़रत ﷺ को लेकर बैतुल्लाह शरीफ में गए और आप ﷺ के तवस्सुल से बारिश की दुआ फरमाई तो बड़ी ज़बरदस्त बारिश हुइ येह वाक़िया बे'सत से पहले का है और बाद-अज़ बेसत कुरैशे मक्का ने आँहज़रत ﷺ को तंग किया और आप ﷺ के आज़ार और तक्लीफ के दर पै हुए तो फिर हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ ने कुरैश को आँहज़रत ﷺ का एहसान और बरकत जतलाइ जो क़ब्ल-अज़ बेसत सिग़रे सिनी में थी और ये शेर पढ़ा :

وَ أَبْيَضٌ يُسْتَقَى اَلْغَمَامُ بِوَجْهِهِ
ثِمَالُ اَلْيَتَامٰى عِصْمَةٌ لِلْأَرَامِلِ

खुलासा शेर का मुलाहज़ा फर्माइए :

"ये गोरे रुख्सार वाला जिसके तुफैल अल्लाह ﷻ से बारिश तलब की जाती है ये यतीमों की जा-ए-पनाह और बेवगान का मुहाफिज़ है।"

फिर मदीना मुनव्वरा में क़हत पड़ा और एक ऐराबी ने आँहज़रत ﷺ के पास आ कर बारिश की इल्तिजा की और आप ﷺ ने दुआ फरमाई और सख्त बारिश हुई और जब लोग बारिश से तंग आ गए और बारिश की बंदिश की इल्तिमास की और आप ﷺ की दुआ से बारिश बंद हुइ इस तफ्सील के बाद दलीले दुवम मुलाहज़ा हो, आप ﷺ ने इस मौक़ा पर फरमाया :

لِلّٰهِ دَرُّ ابی طالب، لَوْكَانَ حَيًّا لَقَرَّتْ عَيْنَاه۔

या'नी **"अल्लाह عزوجل ने हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ को बड़ी ख़ैरे कसीर अता फरमाई है अगर आज ज़िंदा होते तो उनकी आँखें ठंडी होतीं"** आँहज़रत ﷺ के मज़कूरा-बाला अल्फाज़े मुबारका से ईमाने अबी तालिब رضی اللہ عنہ पर दो वजह से दलील है, अव्वल यह कि आप ﷺ ने शहादत दी कि हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ को अल्लाह عزوجل ने ख़ैरे कसीर अता फरमाई है और जिस की मौत कुफ्र पर हो उसके लिये ख़ैरे कसीर का इस्बात नहीं किया जाता और काफ़िर के मुता'ल्लिक पैग़म्बर ﷺ ऐसे अल्फाज़ नहीं इस्तिमाल फरमा सकते। हज़रत अबू तलिब رضی اللہ عنہ को अल्लाह عزوجل ने यही ख़ैरे कसीर अता फरमाई कि जब तक ज़िन्दा रहे तो अल्लाह عزوجل के महबूब ﷺ की ज़बरदस्त इआनत फरमाई और उसकी वजह से क़ुरैश ने आप से तर्के मुवालात की और आपको मक्का शरीफ से निकल कर तीन साल शे'बे अबी तालिब में गुज़ारने पड़े और जब मरे तो ख़ातिमा ईमान पर हुआ।

दुवम आप ﷺ ने इस मौका पर फरमाया अगर हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ आज ज़िंदा होते तो उन की आँखें ठंडी होतीं और वह खुश होते। आँहज़रत ﷺ का मदीना शरीफ में बारिश और उस की बंदिश के लिये दुआ माँगना और फिर दुआ का कुबुल होना यह आँहज़रत ﷺ का मोजिज़ा है और पैग़म्बर علیہ السلام के मोजिज़ा पर मोमिन ही खुश हो सकता है तो मालूम हुआ कि आप ﷺ हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ को मोमिन जानते थे।

दलीले सोयम

(3)

इब्ने साद رحمۃ اللہ علیہ ने तबक़ात में इसनादे सहीह के साथ और इब्ने असाकिर हर दो ने हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہ से हदीस नक़्ल फ़र्माई।

انه سال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم ماترجوا لأبي طالب قال كل الخير أرجو من ربي.

या'नी हज़रत अब्बास رضی اللہ عنہ ने आँहज़रत صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم से पूछा की अबू तालिब رضی اللہ عنہ के मुता'ल्लिक़ आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم को उम्मीद है तो फ़रमाया : **"मैं अपने रब से अबू तालिब رضی اللہ عنہ के मुता'ल्लिक़ मुकम्मल ख़ैर की उम्मीद रखता हूँ।"** मज़कूरा-बाला हदीस में लफ़्ज़ كُلَّ الْخَيْرِ أَرْجُومِنْ رَبِّي ईमाने अबी तालिब رضی اللہ عنہ पर दो वजह से दलील है, अव्वल मुकम्मल ख़ैर की उम्मीद मोमिन के लिए ही होती है मा'लूम हुआ कि हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ आँहज़रत صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم के नज़दीक़ मोमिन थे। दुवम मुकम्मल ख़ैरे दुख़ूल-उल-जन्नह है और दुख़ुले जन्नत मोमिन के साथ ख़ास है जिसकी मौत कुफ़्र पर हो वह जन्नत में दाख़िल नहीं होगा। जैसा कि क़ुरआन-पाक में है : إِنَّ اللهَ لاَ يَغْفِرُ أَن يُشْرَكَ بِهِ الآيَة. या'नी **अल्लाह** جل جلالہ **काफ़िर की हरगिज़ बख़्शिश नहीं करेगा।**

तो मालूम हुआ की अबू तालिब رضی اللہ عنہ जन्नत में दाख़िल होंगे।

(इज़ला-ए-वहम) बाज़ लोग इस दलील का यह जवाब देते हैं कि अबू तालिब رضی اللہ عنہ के अज़ाब में आँहज़रत صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم की वज्ह से तख़फ़ीफ हुई है जैसा कि मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है तो यह जवाब मरदूद कयूँकि अज़ाब शर है इस में कोई ख़ैर नहीं हैं चे-जाएकि कामिल ख़ैर हो।

दलीले चहारुम

(4)

मुस्लिम शरीफ़ में है :

عن عبد الله بن الحارث قال سمعت العباس يقول قلت يارسول الله ان اباطالب كان يحوطک وينصرک ويغضب لک فهل نفعہ ذالک قال نعم وجدتہ فی غمرات من النار فاخرجتہ الیٰ ضحضاح.

खुलासा-ए-मतलब यह है कि....

हज़रत अब्बास ﷺ आँ-हज़रत ﷺ से दरयाफ़्त किया कि अबू तालिब ﷺ आप ﷺ की रिआयत और मदद करता था और आप ﷺ के लिए लोगों पर नाराज़ होता था। क्या इस बात ने इसको नफ़ा दिया। आपने फ़रमाया : **"हाँ नफ़ा दिया मैं ने इसको बुलंद आग़ में पाया पस मैं ने इसको निहायत पतली और हल्की आग की तरफ़ निकाला।"**

मुस्लिम शरीफ़ की एक और हदीस में है :

عن عباس ابن عبد المطلب انہ قال يارسول الله هل نفعت اباطالب بشيئی فانہ كان يحوطكويغضب لک قال صلی الله عليہوآلہ وسلم نعم هو فی ضحضاح من نار ولو لاانا لكان فی الدرک الاسفل من النار.

इस हदीस और पहली हदीस का तर्जुमा तक़रीबन एक जैसा है फ़र्क़ सिर्फ़ यह है कि दुसरी हदीस में यह है :

हज़रत अब्बास ने رضی اللہ عنہ अर्ज़ की : **“या रसूलल्लाह ﷺ आपने अबू तालिब رضی اللہ عنہ को कोई नफ़ा दिया है आप ﷺ ने फ़रमाया मैं ने नफ़ा दिया है वह पतली आग में है अगर मेरी शिफ़ारिश न होती तो दोज़ख़ के निचले तबक़: में होता।”** हर दो हदीस से साबित हुआ कि आँहज़रत ﷺ की बरकत और सिफ़ारिश से हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ के अज़ाब में तख़फ़ीफ हुई है। हालाँकि क़ुरआन-पाक में कुफ़्फ़ार के मुता’ल्लिक़ वारिद है لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْصَرُونَ. या’नी न तो काफ़िरों के अज़ाब में तख़फ़ीफ़ होगी और उनकी मदद की जाएगी।

यह आयत या हदीसे मुबारका सब कुफ़्फ़ार के लिए है किसी काफ़िर की तख़सीस नहीं है और हनफ़ी उसूल के मुताबिक़ इब्तेदां वोह मुख़स्सस होता है कि क़ुरआन की आयत या हदीस मुतवातीर हो और मज़कूरा-बाला दो हदीस मुतवातिर नहीं हैं तो अगर हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ का ख़ातिमा कुफ्र पर होता तो उनके अज़ाब में कभी तख़फ़ीफ न होती चूँकि उनके अज़ाब में तख़फ़ीफ हुई है लिहाज़ा वह मोमिन हैं। इन हर दो हदीस का बाज़ लोग जवाब देते हैं। यह जवाब और इसका रद्द दलीले पंजुम के बाद दिया जाएगा। ان شاء اللہ

दलीले पंजुम

(5)

<u>मुस्लिम शरीफ़ में है</u> :

عن أبي سعيد الخدري أن رسول الله صلى الله عليهو آلہ وسلم ذكر عنده عمہ أبوطالب فقال لعلہ تنفعہ شفاعتي يوم القيامۃ فيجعل في ضحضاح من النار فيبلغ كعبيہيغلى منہ دماغہ۔

खुलासा यह है कि आँहज़्रत ﷺ के नज़्दीक आप ﷺ के चचा अबू तालिब رضی اللہ عنہ का ज़िक्र किया गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया कि : उम्मीद है कि क़यामत के दिन मेरी शफ़ाअत उनको नफ़ा देगी और पतली आग में दाख़िल किया जाएगा जो टख़्नों(Takhnon) तक होगी और उसका दिमाग़ इस आग से जोश करेगा।

इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि आँहज़्रत ﷺ क़यामत में हज़्रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ की शफ़ाअत करेंगे और यह शफ़ाअत हज़्रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ को नफ़ा देगी हालाँकि क़ुरआन-पाक में है فَمَا تَنفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشَّافِعِينَ۔ या'नी कुफ़्फ़ार को शफ़ाअत कुनिन्दाग़ान की शफाअत नफा न देगी यहां कुफ़्फ़ार और शफाअत कुनिन्दाग़ान हर-दो में तामीम है या'नी किसी काफ़िर को किसी शाफ़े की शफ़ाअत नफा न देगी और हदीस से साबित है कि हज़्रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ को आँहज़्रत ﷺ की शफ़ाअत नफ़ा देगी। तो अगर हज़्रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ की मौत कुफ़्र पर है तो फिर शफ़ाअत नफ़ा न देगी और जबकि शफ़ाअत नफ़ा देगी तो मालूम हुआ कि अबू तालिब رضی اللہ عنہ मोमिन हैं यहाँ दलील चहारुम और पंजुम पर मुन्किरीने ईमान हज़्रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ दो ए'तिराज़ करते हैं या यूँ कहिये इन दलीलों के दो जवाब देते हैं।

◈ जवाबे अव्वल ◈

आँ-हज़रत ﷺ की शफ़ाअत के कई अक़साम हैं और इन अक़साम से एक क़िस्म यह है कि आप ﷺ की शफ़ाअत से काफ़िर के अज़ाब में तख़्फ़ीफ़ हो सकती है और तख़्फ़ीफ़ की यह शफ़ाअत बाज़ कुफ़्फ़ार को नफ़ा दे सकती है लिहाज़ा अबू तालिब رضی اللہ عنہ की तख़्फ़ीफ़ की यह शफ़ाअत बाज़ कुफ़्फ़ार को नफ़ा दे सकती है लिहाज़ा अबू तालिब رضی اللہ عنہ की तख़्फ़ीफ़ और नफ़ा-ए-शफ़ाअत आयात के मुनाफ़ी नहीं है और यह शफ़ाअत आप ﷺ का ख़ास्सा है। यह जवाब कई वुजूह से दुरुस्त नहीं है।

◈ वजहे अव्वल :

क़ब्ल अज़ीं गुज़र चुका है कि अहनाफ़ (हनफ़ीयों) के नज़दीक उमूमात क़ुरआनी क़तईयत का फ़ाइदा देती है और उमूमात के लिए ज़रूरी है कि इनका इब्तिदाई मुखस्सस कतई हो या'नी क़ुरआन की आयत या हदीस मुतवातिर, तो जिस मख़्सूस शफ़ाअत का ज़िक्र किया गया है यह किसी दलीले क़त्तई से साबित नहीं है लिहाज़ा यह शफ़ाअत उमूमात क़ुरआनी कि तख़्सीस नहीं कर सकती उमूमाते क़ुरआनी का ज़िक्र क़ब्ल अज़ीं हो चुका है या'नी......

قَوْلِہٖ تَعَالیٰ لاَ یُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ الایتہ

और

فَمَا تَنفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشَّافِعِينَ۔

◈ **वजहे दुवम :**

यह मख़्सूस शफ़ाअत दलील चहारुम और पंजुम में मज़्कूर हर दो अहादीस से अख़्ज़ की गई है या'नी आँहज़रत ﷺ की बरकत और शफ़ाअत से हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ के अज़ाब में तख़्फ़ीफ़ हुई तो जो उलमा हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ के ईमान के क़ाइल नहीं हैं उन पर इतिराज़ वारिद हुआ कि नस्से क़त्तई (The Definitive Text) (निर्णायक बात जो कुरआन से है) से साबित है कि कुफ़्फ़ार के अज़ाब में न तख़्फ़ीफ़ होगी और न उन को किसी की शफ़ाअत नफ़ा देगी और तुम लोग हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ के कुफ़्र के क़ाइल हों तो फिर काफ़िर को येह तख़्फ़ीफ़ क्युँ हुई और उनको शफ़ाअत ने क्युँ नफ़ा दिया तो उन उलमा ने इस मख़्सूस शफ़ाअत का सहारा लिया कि आँहज़रत ﷺ के लिए एक ख़ास शफ़ाअत है कि काफ़िर को भी नफ़ा दे सकती है, ख़ुलासा यह कि यह "क़िस्मे शफ़ाअत" कुफ़्रे अबी तालिब رضی اللہ عنہ पर मबनी है और इस शफ़ाअत को उन हर दो अहादीस से इस बिना पर अख़्ज़ किया गया कि हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ काफ़िर थे तो जब हम ने हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ का ईमान साबित कर दिया तो इस शफ़ाअत का मबनी फ़ासिद (Corrupt) (ग़लत) ठहरा।

लिहाज़ा शफ़ाअत वाला जवाब निहायत कमज़ोर ठहरा और हर दो अहादीस से इस शफ़ाअत का अख़्ज़ भी बातिल हुआ क्युँकि इन हर दो अहादीस से तो हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ का ईमान साबित हुआ, ताकि यह अहादीस क़ुरआन के मआरिज़ न हों तो इन अहादीस से यह शफ़ाअते ख़ास्सा साबित हुई। क़ब्ल-अज़ीं ज़िक्र किया गया है कि मुन्करीने ईमाने अबू तालिब رضی اللہ عنہ हर दो हदीसे मज़्कूरा बाला के दो जवाब देते हैं। यहाँ तक एक जवाब और इसका दो वजह से रद किया गया अब मुन्करीन का दूसरा जवाब मुलाहज़ा हो।

◈ जवाबे दुवम ◈

जिस तरह अबू तालिब ﷛ के अज़ाब में तख़्फ़ीफ हुई है इसी तरह अबू लहब के अज़ाब में भी तख़्फ़ीफ हुई और उस तख़्फ़ीफ का ज़िक्र भी कुतुबे अहादीस में है तो हज़रत अबू तालिब ﷛ की तख़्फ़ीफे अज़ाब से अगर उनका मोमिन होना साबित होता है तो फिर अबू लहब की तख़्फ़ीफ से भी उसका मोमिन होना साबित हो जाएगा क्युँकि नस्से क़ुरआनी के मुताबिक़ काफ़िर के अज़ाब में तख़्फ़ीफ नहीं हो सकती हालाँकि अबू लहब के ईमान का तो कोई क़ाइल नहीं है तो यह जवाब भी चंद वुजूह से मरदुद है।

◈ **वजहे अव्वल :**

अबू लहब को किसी ने ख़्वाब में देखा और उससे दरियाफ़्त किया तो अबू लहब ने कहा कि मैं ने आँहज़रत ﷺ की विलादत की खुशी में अपनी लौन्डी आज़ाद की थी जिसकी वजह से मुझे उंगली से पानी मिलता है। बर-खिलाफ़ हज़रत अबू तालिब ﷛ के कि उनके मुता'ल्लिक़ खुद आँहज़रत ﷺ का फ़रमान है कि मेरी शफ़ाअत अबू तालिब ﷛ को नफ़ा देगी और पतली आग में डाला जाएगा।

◈ **वजहे दुवम :**

अबू लहब का वाक़िआ ख़्वाब का है जो किसी को आया था और ख़्वाब हुज्जत और दलील नहीं है। बर-ख़िलाफ़ हज़रत अबू तालिब ﷛ के कि आपकी तख़फ़ीफे अज़ाब फ़रमाने नबवी से साबित है और यह कोई ख़्वाब का वाक़िआ नहीं है।

◈ **वजहे सोयम :**

जिस आदमी ने अबू लहब को ख़्वाब में देखा था वह उस वक़्त मुसलमान नहीं था लिहाज़ा उसकी बात का क़ाबिल एतिमाद नहीं है।

◈ **वजहे चहारुम :**

हज़्रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ के ईमान पर दलाइल गुज़र चुके हैं कि उनके दिल में तसदीक़ थी और ज़बान से इक़रार किया और आँहज़्रत ﷺ की तमाम उम्र इज़्ज़त की, दुश्मन के शर से आपको बचाया लिहाज़ा अबू तालिब رضی اللہ عنہ के ईमान का इक़रार करना होगा। बर-ख़िलाफ़ अबू लहब के कि उसने सारी उम्र आँहज़्रत ﷺ को तकलीफ़ दी है और आप ﷺ के हक़ में गुस्ताख़ियाँ कीं चुनाँचे हदीस शरीफ़ में है कि अबू लहब ने आँहज़्रत ﷺ को मुख़ातिब करके यह गुस्ताख़ाना अल्फ़ाज़ कहे : تَبًّا لَّكَ या'नी तेरे लिए हलाकत है अल-इयाज़ु बिल्लाह इस गुस्ताख़ी से अल्लाह ﷻ को इतना ग़ुस्सा आया कि अबू लहब की मज़म्मत में पूरी एक सूरत क़ुरआन-पाक में नाज़िल फ़रमाई जब हज़्रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ से कुफ़्फ़ारे मक्का ने आँ-हज़्रत ﷺ की वजह से तर्के मुवालात किया और अबू तालिब رضی اللہ عنہ को आँहज़्रत ﷺ की जान का ख़तरा पैदा हुआ तो अबू तालिब رضی اللہ عنہ मक्का छोड़ कर बाहर शे'बे अबी तालिब में चले गए तो तमाम बनु हाशिम ने हज़्रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ का साथ दिया ख़्वाह वोह मुसलमान थे या काफ़िर **लेकिन अबू लहब जो कि हज़्रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ का भाई था येह अबू तालिब رضی اللہ عنہ के साथ नहीं गया था और कुफ़्फ़ारे मक्का का साथ दिया क्युँकि इसकी बीवी अबू सुफ़ियान की बहन थी।**

ख़ुलासा यह है कि हज़्रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ और अबू लहब में ज़मीन और आसमान से ज़्यादा फ़र्क़ है तो सिर्फ़ ख़्वाब की बिना पर अबू लहब को मुसलमान नहीं कहा जा सकता। यहाँ तक बंदा ने हज़्रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ के ईमान पर पाँच दलाइल ज़िक्र किए हैं। और मुन्कीरीने ईमान अबू तालिब رضی اللہ عنہ ने चूँकि बाज़ दलाइल के जवाब दिए उन जवाबात को ज़िक्र कर के उन का रद्द किया गया है। अब दलीले शशुम मुलाहज़ा फ़रमाएं.....

दलीले शशुम

(6)

तिर्मिज़ी, अबु-दाऊद और इब्ने माजा में हदीस शरीफ़ है कि आँहज़रत ﷺ ने फ़रमाया : شفاعتی لاھل الکبائر من امتی۔

या'नी **"मेरी उम्मत से जिन्होंने कबाइर का इर्तिकाब किया है मैं उनकी शफ़ाअत करूँगा।"**

येह अम्र मुसल्लम है कि उन अह्ले कबाइर से मुराद मुसलमान और मोमिन हैं क्युँकि काफ़िर के लिए शफ़ाअत नहीं है जैसा कि क़ुरआन-करीम में है और चूँकि हदीस से साबित किया जा चुका कि हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ के लिए शफ़ाअत होगी और शफ़ाअत उनको नफ़ा भी देगी लिहाज़ा हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ भी मज़्कूरा बाला हदीस में दाख़िल हैं और मुसलमान हैं।

दलीले हफ्तुम

(7)

मुहद्दिस इब्ने इस्हाक़ رحمۃ اللہ علیہ ने हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہما से एक हदीस नक़्ल फ़रमाई है :

عن ابن عباس ان ابا طالب لما تقارب
منہ الموت بعدان عرض علیہ النبی صلی
اللہ علیہ وآلہ وسلم ان یوقل لا الہ اللہ
فابیٰ قال فنظر العباس الیہ وھو یحرک
شفتیۃ فاصغی الیہ فقال یاابن اخی واللہ
لقد قال اخی الکلمۃ التی امرتۃ ان یقولھا۔

खुलासा-ए-हदीस यह है कि "जब हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ क़रीब-उल-मर्ग हुए तो आँहज़रत صلی اللہ علیہ وسلم ने उनको फ़रमाया कि कलिमा لا الہ الا اللہ पढ़ो तो अबू तालिब رضی اللہ عنہ ने इन्कार किया उसके बाद हज़रत अब्बास رضی اللہ عنہ ने देखा कि अबू तालिब رضی اللہ عنہ अपने होंटों को हरकत दे रहे हैं तो हज़रत अब्बास رضی اللہ عنہ ने अपना कान अबू तालिब رضی اللہ عنہ की तरफ़ झुकाया और आँहज़रत صلی اللہ علیہ وسلم को मुख़ातिब करते हुए अर्ज़ किया कि जिस कलिमा-ए-तय्यिबा का आपने अबू तालिब رضی اللہ عنہ को हुक्म फ़रमाया था वह कलिमा मेरे भाई (अबू तालिब رضی اللہ عنہ) ने पढ़ लिया है।" तो इस हदीस से साबित हो गया कि अगर्चे एक दफ़ा कलिमा पढ़ने से इन्कार किया लेकिन इसके बाद क़ब्ल अज़ मर्ग कलिमा لا الہ الا اللہ पढ़ लिया तो उनकी मौत ईमान पर हुई। मुंन्कीरीने ईमाने अबू तालिब رضی اللہ عنہ इस हदीस के कई जवाब देते हैं।

◈ जवाब अव्वल ◈

इस हदीस के रावी हज़रत अब्बास رضی اللہ عنہ हैं और वह उस वक़्त मुसलमान नहीं थे लिहाज़ा यह हदीस क़ाबिले हुज्जत नहीं है। यह जवाब चंद वुजूह से मरदूद (ग़लत) है।

◈ वजहे अव्वल :

यह दुरुस्त है कि हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ की मौत के वक़्त हज़रत अब्बास رضی اللہ عنہ मुसलमान नहीं हुए थे लेकिन हमारा इस्तिदलाल महज़ हज़रत अब्बास رضی اللہ عنہ की बयान-कर्दा हदीस नहीं हैं बल्कि हमारा इस्तिदलाल इस तरह है कि जब हज़रत अब्बास رضی اللہ عنہ ने आँहज़रत صلی اللہ علیہ وسلم को अबू तालिब رضی اللہ عنہ के कलिमा पढ़ने के मुता'ल्लिक़ अर्ज़ की तो आँहज़रत صلی اللہ علیہ وسلم ख़ामोश रहे और हज़रत अब्बास رضی اللہ عنہ के बयान की तक़रीर फ़रमाई तो गोया आँहज़रत صلی اللہ علیہ وسلم ने हज़रत अब्बास رضی اللہ عنہ की बात

को दुरुस्त तस्लीम किया तो बंदा का इस्तिदलाल इस तक़रीर से है क्युँकि उसूले हदीस में तसरीह है कि आँहज़रत ﷺ की हदीस की तीन क़िस्म हैं। (१) क़ौल, (२) फेल, (३) तक़रीर और तक़रीर यह है कि आँहज़रत ﷺ किसी फेल का मुशाहदा फ़रमा दें या कोई बात सुनें और सुकूत फ़रमादें तो यह सुकूत दलील है कि वह फेल और क़ौल दुरुस्त और सहीह है।

◈ **वजहे दुवम :**

मज़कूरा बाला हदीस के रावी हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہ हैं और अपने वालिद से रिवायत करते हैं तो ज़ाहिर है कि इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہ ने यह हदीस अपने वालिद से बाद अज़ इस्लाम हज़रत अब्बास رضی اللہ عنہ से सुनी है। यहाँ तक मुन्कीरीने ईमाने अबू तालिब رضی اللہ عنہ के जवाबे अव्वल का रद्द है उन का जवाब दुवम मुलाहिज़ा फ़रमाएं....

◈ जवाबे दुवम ◈

मुस्लिम शरीफ़ में एक हदीस है :

لما حضرت ابا طالب الوفاة جاءه رسول الله
صلى الله عليہوآلہ وسلم فوجد عنده ابا جهل
وعبد الله ابن أبى امية بن المغيرة فقال رسول الله
صلى الله عليہوآلہ وسلم يا عم قل لا الہ الا الله
كلمة اشهد لک بها عند الله فقال ابو جهل وعبد
الله بن أبى اميةيا ابا طالباترغب عن ملة عبد
المطلب فلم يزل رسول الله صلى اللہعليہوآلہ
وسلم يعرضها عليه و يعيد لہ تلک المقالة حتى
قال ابو طالب آخرما كلمهم هو علىٰ ملة عبد
المطلب و ابىٰ ان يقول لا الہ الا الله الحديث۔

खुलासा-ए-हदीस शरीफ़ यह है कि "जब अबू तालिब رضی اللہ عنہ की मौत का वक़्त आया तो आँहज़रत صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم उनके पास आए अबू जहल और अब्दुल्लाह बिन उमय्या भी अबू तालिब رضی اللہ عنہ के पास बैठे थे तो आँहज़रत صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने फ़रमाया : 'मेरे चचा لا الہ الا اللہ पढ़ो, ताकि अल्लाह ﷻ के नज़दीक मैं तुम्हारे कलिमा की गवाही दूँगा।' तो अबू जहल और अब्दुल्लाह बिन उमय्या ने अबू तालिब رضی اللہ عنہ को कहा कि तू हज़रत अब्दुल मुत्तलिब رضی اللہ عنہ के दीन से फिरता है तो आँहज़रत صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم अबू तालिब رضی اللہ عنہ पर बार बार कलिमा-ए-तय्यिबा पेश करते रहे तो हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ ने अबू जहल वग़ैरह से जो आख़िरी कलाम की वह यह थी कि 'मैं अब्दुल मुत्तलिब رضی اللہ عنہ के दीन पर हूँ।' और कलिमा-ए-तय्यिबा पढ़ने से इन्कार किया। मुंन्कीरीने ईमाने अबू तालिब رضی اللہ عنہ कहते हैं कि हदीसे इब्ने इस्हाक़ علیہ الرحمۃ से अबू तालिब رضی اللہ عنہ का ईमान साबित होता है और हदीसे मुस्लिम शरीफ़ से उनका कुफ़्र साबित होता है तो हर वह हदीस में तआरुज़ है तो चूँकि मुस्लिम शरीफ़ की हदीस अस्सह है लिहाज़ा इसको तरजीह होगी। यह जवाब कई वजह से मरदूद है।

◈ **वजह अव्वल :**

हदीसे इब्ने इस्हाक़ علیہ الرحمۃ और हदीसे मुस्लिम शरीफ़ में कोई तआरुज़ (Conflict) (विरोधाभास) नहीं है क्युँकि मुस्लिम शरीफ़ में यह अल्फ़ाज़ है : آخرما كلمهم هو या'नी अबू जहल वग़ैरह के साथ अबू तालिब رضی اللہ عنہ की आख़िरी कलाम यह थी और हदीसे इब्ने इस्हाक़ علیہ الرحمۃ के यह अल्फ़ाज है:

بعد ان عرض عليه النبى
صلى الله عليه وآله وسلم ان
يوقل لا اله الله فابىٰ الحديث۔

या'नी हज़रत अब्बास ﷺ ने जो अबू तालिब ﷺ से कलिमा-ए-तय्यिबा सुना तो यह अबू जहल वग़ैरह से कलाम करने के बाद का वाक़िआ है तो इन्कारे अबू तालिब ﷺ पेहले है और कलिमा-ए-तय्यिबा बाद में तो ज़माना का इख़्तिलाफ़ है लिहाज़ा कोइ तआरुज़ नहीं है। तआरुज़ तब होता कि मुस्लिम शरीफ के येह लफ्ज़ होते : قال ابو طالب آخر کلامہ या'नी **"अबू तालिब ﷺ की आखरी कलाम यह थी"** हालाँ कि अल्फाज़ इस तरह नहीं हैं, मुन्कीरीन पर हैरत होती है कि मुस्लिम शरीफ के वाज़ेह अल्फाज़ के बावजूद उसे मुतआरिज़ क़रार दिया।

◈ **वजह दुवम :**

मुन्कीरीने ईमाने अबू तालिब ﷺ ने हदीसे मुस्लिम को असाह़ कहा है तो उसे साफ ज़ाहिर है कि उनके नज़दीक हदीसे इब्ने इस्हाक़ ﷺ सहीह है तो अब मुन्कीरीन के नज़्दीक सहीह और असाह़ में तआरुज़ है तो बंदा कहता है कि यहाँ ईमाने अबू तालिब ﷺ में सहीह को तरजीह है क्योंकि बंदा क़ब्ल अर्ज़ी मुक़द्दमा में ज़िक्र आया है कि : الاسلام یعلوا ولا یعلیٰ या'नी ईमान और कुफ्र के दलाइल में तआरुज़ हो तो इस्लाम को तरजीह है अगरचे इस्लाम के दलाइल कमज़ोर ही क्यों न हों जैसा कि फ़ुक़्हा का कायदा है।

◈ **वजह सोयम :**

मुन्कीरीने ईमाने अबू तालिब ﷺ ने हदीसे मुस्लिम शरीफ को अस्सह़ कहा है कि यह सहीहैन की हदीस है और इब्ने इस्हाक़ ﷺ की हदीस सहीहैन की हदीस नहीं है तो बंदा उस को तस्लीम नहीं करता कि हदीसे मुस्लिम इस लिए अस्सह़ है और उसको तरजीह इस वजह से है कि यह हदीस मुस्लिम शरीफ में है। देखीए मुस्लिम शरीफ में एक हदीस है जिस्से आँहज़रत ﷺ के वालिद माजिद ﷺ का

काफ़िर होना साबित होता है। हालाँ कि मुहक़्क़िक़ीन के नज़दीक तरजीह उन अहादीस को हासिल है जिन से आप ﷺ के वालिदैन करीमैन رضی اللہ عنہ का मुसलमान होना साबित होता है हालाँ कि ईमान की अहादीस सहीहैन में नहीं हैं इसी तरह हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ के इमान की हदीस अगरचे सहीहैन में नहीं है लिहाज़ा उसको तरजीह होगी।

◈ वजह चहारुम :

हदीस शरीफ में तसरीह है कि हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ ने मौत के वक़्त फ़रमाया कि मैं अब्दुल मुत्तलिब رضی اللہ عنہ की मिल्लत पर हूँ और لا الہ الا اللہ से इन्कार किया है। अब सवाल यह पैदा होता है कि मुहक़्क़िक़ीने अहले सुन्नत के नज़्दीक हज़रत अब्दुल मुत्तलिब رضی اللہ عنہ मुवह्हिद (Monotheist) (तौहीद पर ईमान रखने वाले) थे तो हज़रत अब्दुल मुत्तलिब رضی اللہ عنہ की मिल्लत पर होना तौहीद का इक़रार है और फिर لا الہ الا اللہ भी तो कलिमा ए तौहीद है हालाँ कि इस कलिमा से इन्कार किया है तो गोया तौहीद का इक़रार भी है और इन्कार भी और यह सहीह तआरुज़ है तो इस तआरुज़ का जवाब यही होगा कि मिल्लते अब्दुल मुत्तलिब رضی اللہ عنہ यह तौहीद इज्माली (Brief) (संक्षिप्त) है और لا الہ الا اللہ ये तौहीद तफ्सीली (विस्तृत) है तो तौहीदे इज्माली का इक़रार किया है और तौहीदे तफ्सीली से इंकार तो **हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ तौहीदे इज्माली के लिहाज़ से मुवह्हिद (तौहीद पर ईमान रखने वाले) और मुसलमान हुए क्यूंकि इल्मे कलाम में तस्रीह है कि ईमाने इज्माली मोमिन होने के लिये काफ़ी है और तौहीदे तफ्सीली से इन्कार अबू तालिब رضی اللہ عنہ के ईमान के मुनाफी नहीं है क्योंकि हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ मुकरा (Pressurized)** (दबाव में) थे अगर उस वक़्त सराहतन अपने ईमान का इक़रार करते तो उनको अपनी जान और आँहज़रत ﷺ की जान का ख़तरा था और उसकी वजह

यह थी कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश अपने हम मज़्हब का बड़ा लिहाज़ करते थे। अगरचे वह मामुली आदमी होता था चे-जाए-कि वह आदमी बड़े रुतबा वाला हो और जो आदमी मुसलमान हो जाता था तो उसकी जान के दुश्मन हो जाते थे तो हज़्रत अबू तालिब कुरैश से ऐसी कलाम फरमाते थे कि कुरैश ये वहम करते थे कि अबू तालिब हमारे मज़्हब से हैं और इस वजह से कुरैश क़त्ल जैसे इक़्दाम से इज्तेनाब करते थे चुनाँचे कुतुबे हदीस में मौजुद है कि आँहज़्रत हज़्रत अबू तालिब की मौत के बाद फरमाते थे कि **"हज़्रत अबू तालिब की मौत के बाद क़ुरैश ने मुझे ऐसी इज़ा दी कि अबू तालिब की ज़िंदगी में उसका तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता था।"** हदीस शरीफ के अल्फाज़ ये हैं :

وكان صلى الله عليه وآله وسلم يقول لما مات ابو طالب نالت قريش من النبي ية من الاذىٰ ما لم تكن تطمع فيه في حياة أبي طالب۔

या'नी आँहज़्रत हज़्रत अबू तालिब की मौत के बाद फरमाते थे कि **"क़ुरैश ने मुझे ऐसी इज़ा और तक्लीफ दी है कि हज़्रत अबू तालिब की ज़िंदगी में ऐसी इज़ा का ख़्याल भी न करते थे।"** ज़्यादा से ज़्यादा कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने हज़्रत अबू तालिब को ये पेशकश की कि आप हम से दुगना खून बहा ले लें और आँहज़्रत को क़ुरैश के सपुर्द कर दें कि वह आप को क़त्ल कर दें। लेकिन हज़्रत अबू तालिब और दूसरे बनू हाशीम ने इस पेश-कश को ठुकरा दिया और मक्का मुकर्रमा छोड कर शे'बे अबी तालिब में चले गए।

खुलासा-ए-वजह चहारुम ये है कि अगर अबू तालिब رضي الله عنه ऐलानिया अपने ईमान का इज़्हार फरमाते तो उनको अपनी और अपनी औलाद और आँहज़रत صلى الله عليه وآله وسلم की जान का खतरा था। इस लिए कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के सामने गाहे (कभी) ऐसे अल्फाज़ इस्तिमाल फरमाते थे जिन में ईमान व कुफ्र दोनों का एहतिमाल होता था और गाहे ज़बान पर सरीह कल्मा ए कुफ्र भी जारी करते थे लेकिन दिल ईमान से मामुर होता था बंदाइस मकाम पर हज़रत अबू तालिब رضي الله عنه के ईमान पर दलाइल नक़ल कर रहा है और मुन्कीरीने ईमाने अबू तालिब رضي الله عنه ने इन दलाइल के जो जवाब दिये हैं उनका साथ साथ रद्द भी कर रहा है यहाँ तक ईमाने अबू तालिब رضي الله عنه पर सात दलाइल आ चुके हैं अब दलीले हश्तुम मुलाहज़ा फरामाएं।

दलीले हश्तुम

(8)

सही मुस्लिम शरीफ में है :

**عن ابن عباس ان رسول الله
صلى الله عليه وآلہ وسلم قال ان
اهون اهل النار عذاباً ابو طالب الخ۔**

दलील की तक़रीर से क़ब्ल एक मुक़द्दिमा मुलाहज़ा हो लफ्ज़ नार का इत्लाक़ गर्म दोज़ख के तमाम तब्क़ात पर होता है और अह्ले नार दो क़िस्म हैं। क़िस्मे अव्वल मोमिने आसी मुर्तकिबुल क़बीरा क़िस्म दुवम जिस्की मौत कुफ्र पर है, और चुँकि कुफ्रे अकबर कबाइर से है लिहाज़ा इसका अज़ाब दूसरे तमाम कबाइर से शदीद और सख्त होगा और यही अदल का मुक़्तज़ा है कुफ्र को अल्लाह ﷻ हर्गीज़ मुआफ नहीं करेगा इसके सिवा जुमला कबाइर में उम्मीदे मुआफ़ी है और अगर किसी काफिर को मुसलमान से कम अज़ाब हो तो ये मुनाफ़ी ए अदल है। इस तम्हीदी मुक़द्दिमा के बाद दलील की तक़रीर मुलाहज़ा हो कि अह्ले नार ख़्वाह काफ़िर हैं या मोमिन हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ को उन सबसे नर्म अज़ाब होगा। अब अगर हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ के ईमान से इन्कार किया जाए तो लाज़िम आएगा काफ़िर को मोमिन से नर्म अज़ाब हो और यह ख़िलाफ़े अदल और ख़िलाफ़े इज्मा है। अलबत्ता अगर हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ मोमिन और मुसलमान हों और उनका अज़ाब कुफ़्फ़ार और आसी मोमिन से नर्म हो तो कोई खराबी नहीं है क्योंकि मोमिन का अज़ाब काफ़िर से होना बिल्कुल अदल है, मुन्कीरीने ईमाने अबू तालिब رضی اللہ عنہ इस दलील का जवाब देते हैं...

उनका जवाब मुलाहज़ा हो : हदीस शरीफ में ये है कि हज़रत अबू तालिब ﷺ का अज़ाब तमाम अह्लुन्नार के अज़ाब से नर्म होगा और अह्ले नार का इत्लाक़(इस्तमाल)(बालाजान) कुफ़्फ़ार पर आता है। मोमिने आसी पर अह्लुन्नार का इत्लाक़ नहीं आता तो हदीस शरीफ से सिर्फ ये साबित हुआ कि तमाम कुफ़्फ़ार से अबू तालिब ﷺ का अज़ाब नर्म होगा अब अगर अबू तालिब ﷺ मोमिन न हो तो सिर्फ यह लाज़िम आएगा कि एक काफिर का अज़ाब दूसरे कुफ़्फ़ार के अज़ाब से नर्म हो और उसमें कोई इस्तेहाला नहीं है। खराबी तब लाज़िम आती कि एक काफिर का अज़ाब मोमिने आसी के अज़ाब से नर्म हो ये जवाब एक निहायत मुक़्तदिर और मुअज़्ज़ज़ शख़्सियत की तरफ़ मंसूब किया गया है। अब इस जवाब का रद्द मुलाहज़ा हो... जवाब की मदार इस अम्र पर थी कि लफ़्ज़ 'अह्लुन्नार' का इत्लाक़ कुफ़्फ़ार के साथ मुख़्तस है और यह दुरुस्त नहीं, कितनी अहादीस हैं जिनमें अह्लुन्नार का इत्लाक़ मोमिने आसी पर किया गया है। **अहादीस मुलाहज़ा हों......**

◈ हदीसे अव्वल ◈

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم اذا دخل اهل الجنة الجنة واهل النار النار يقول الله تعالىٰ من كان فى قلبه مثكال حبة من خردل من ايمان فاخرجوه فيخرجون الحديث۔

या'नी अह्ले जन्नत जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे और अह्ले नार आग में दाख़िल हो जाएंगे। अल्लाह ﷻ फ़रमाएगा कि हर वोह जिस के दिल में राई के बराबर ईमान है तो उसको निकालो पस वह निकल

जाएंगे और वह जल कर कोएला हो चुके होंगे। अलख़ जो लोग निकाले जाएंगे यह अहले नार से हैं और मोमिन हैं और उन पर अहले नार का इत्लाक़ है। यह हदीस बुख़ारी और मुस्लिम की है यहाँ यह जानना ज़रूरी है कि काफ़िर कभी दोज़ख़ से निकाला नहीं जाएगा और काफ़िर हमेशा दोज़ख़ में रहेगा। अलबत्ता मोमिन दोज़ख़ से निकाला जाएगा और कोई मोमिन हमेंशा दोज़ख़ में नहीं रहेगा।

◈ हदीसे दुवम ◈

عن ابی ہریرۃ رضی اللہ عنہ ان الناس قالوا یا رسول اللہ ھل نری ربنا یوم القیماۃ (الیٰ ان قال) ویبقیٰ رجل بین الجنۃ والنار وھو آخر اھل النار دخولاً الجنۃ الحدیث۔

या'नी एक आदमी जन्नत और दोज़ख़ के दरमियान रह जाएगा और जितने अहले नार जन्नत में दाख़िल होंगे यह आदमी अहले नार से होगा और सबसे आख़िर में जन्नत में दाख़िल होगा। अब यह आदमी मोमिन होगा और उस पर अहलुन्नार का इत्लाक़ है और यह वाज़ह है बल्कि जितने मोमिन दोज़ख़ से निकाले जाएंगे वह जन्नत में दाख़िल होंगे सब पर अहले नार का इत्लाक़ इस हदीस शरीफ़ से साबित होता है क्यूँकि हदीस-शरीफ़ के अल्फ़ाज़ यह है : ھو آخر اھل النار دخولاً الجنۃ या'नी यह आदमी अहले नार से होगा आख़िर में जन्नत में दाख़िल होगा। मालूम हुआ बाज़ अहले नार पहले जन्नत में होंगे और बाज़ दर्मियान में और बाज़ आख़िर में, और पहले बयान हो चुका है की जो आदमी दोज़ख़ से निकाल कर जन्नत में दाख़िल किया जाएगा वह मोमिन और मुसलमान होगा। यह हदीस सहीह बुख़ारी और मुस्लिम की है।

◈ हदीसे सोयम ◈

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم انى لاعلم آخر اهل النار خروجاً منها وآخر اهل الجنة دخولاً رجل يخرج من النار الحديث۔

या'नी आँहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि मैं उस अह्ले नार को जानता हूँ जो आख़िर में आग से निकलेगा और यह आदमी अह्ले जन्नत से भी है कि आख़िर में जन्नत में दाख़िल होगा अब यह आदमी जिस को सरवरे दो-आलम ﷺ जानते हैं इस पर अह्ले नार और अह्ले जन्नत हर दो का इत्लाक़ आया है और यह मोमिन है और यह हदीस भी बुख़ारी और मुस्लिम की है। इसके अलावा और भी कई अहादीस हैं जिन में मोमिन पर अह्लुन्नार का इत्लाक़ आया है यहाँ सिर्फ़ इन तीन अहादीस पर इक्तिफ़ा किया जाता है बंदाक़ब्ल-अज़ी ज़िक्र कर चुका है कि यह कहना कि अह्लुन्नार का इत्लाक़ कुफ़्फ़ार के साथ मुख़्तस है यह क़ौल एक निहायत मुक़्तदिर आलिमे दीन की तरफ़ मंसूब है और चूँकी बंदा ने अहादीस से साबित किया है कि अह्लुन्नार का इत्लाक़ मोमिने आसी पर भी आता है तो यह क़ौल इस मुक़्तदिर आलिमे दीन का नहीं है और उसकी तरफ़ यह निस्बत ग़लत है।

दलीले नहुम

(9)

क़ुरआन-पाक में है :

وَاتَّقُواْ يَوْماً لاَّ تَجْزِي نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْئاً وَّلاَ يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌالآيَة.

या'नी "उस दिन से डरो जिस दिन कोई जान दूसरे का बदला न हो सकेगी और क़ुबूल न हो उसकी तरफ़ से सिफ़ारिश और न कुछ ले कर उसकी जान छोड़ी जाए और ना उनकी मदद हो।"

इस आयते मुबारका में लफ़्ज़े नफ़्स और शयअन् और दो नुकेरा हैं तेहतुन्नफ़ी और यह उमूम का फ़ाइदा देता है तो मतलब यह हुआ कि न मोमिन के लिए शिफ़ारिश और शफ़ाअत होगी और न काफ़िर के लिए और फ़िर्क़ा-ए-मोतज़िला ने इसी आयत से नफ़ी-ए-शफ़ाअत पर इस्तिदलाल किया है और अहले सुन्नत ने इसका जवाब दिया है कि चूँकि अहादीसे मुत्वातिरा से मोमिनों के लिए शफ़ाअत साबित है लिहाज़ा यह आयत कुफ़्फ़ार के साथ मुख़्तस है। या'नी किसी काफ़िर की तरफ़ से शफ़ाअत क़ुबूल न होगी। अब बंदा का इस्तिदलाल यह है कि मा-क़ब्ल हदीसे मुस्लिम शरीफ़ में ज़िक्र हो चुका है कि हज़रत अबू तालिब ؓ के हक़ में आँहज़रत ﷺ की शफ़ाअत मक़बूल है अब अगर हज़रत अबू तालिब ؓ को काफ़िर कहा जाए तो फिर आयते मज़्कूरा-बाला के तहत न मुसलमान दाख़िल होगा और न काफ़िर या'नी मोमिन और काफ़िर हर एक के हक़ में शफ़ाअत मक़बूल है तो आयत में कोई फ़र्द भी दाख़िल न हुआ और आयत का मज़्मून मुताबिक़े वाक़ेअ' न हुआ और नउज़ुबिल्लाह आयत का मज़्मून मोहमल हुआ। अलबत्ता अगर हज़रत अबू तालिब ؓ को मुसलमान कहा जाए तो फिर आयते

मुबारका तमाम कुफ़्फ़ार के साथ मख़्सूस होगी बंदायहाँ इसकी एक नज़ीर पेश करता है ताकि इस्तिदलाल वाज़ेह हो जाए। क़ुरआन-पाक में है لَا تَأْكُلُوْا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ या'नी जिस ज़बीहा पर अल्लाह ﷻ का नाम ज़िक्र न किया जाए उसको न खाओ। अब अल्लाह ﷻ का ज़िक्र न करना दो क़िस्म है।

- **क़िस्मे अव्वल :-** अम्दन (इरादे से या इख़्त्यार होने के बावजूद) और जान-बूझ कर ज़िक्र न करना।
- **क़िस्मे दुवम :-** निस्यानन(जिस पर भूल हर वक़्त ग़ालिब रहती है या'नी भूलने की आदत) और भूल से ज़िक्र न करना।

अगर भूल कर ज़िक्र न किया जाए इस पर इजमा है कि ज़बीहा हलाल है और अगर जान-बूझ कर अल्लाह ﷻ का नाम न लिया जाए तो अहनाफ(इमाम अबू हनीफा رحمة الله عليه के पैरोकार) के नज़्दीक़ हराम है और इमाम शाफ़ई رحمة الله عليه फ़रमाते हैं कि यह ज़बीहा भी हलाल है। तो अहनाफ़ इमाम शाफ़ई رحمة الله عليه का रद्द किया है कि आयते मुबारका मज़्कूरा-बाला में जो अल्लाह ﷻ का नाम न ज़िक्र करना बयान किया गया है इसके दो क़िस्म हैं अव्वल जान बूझ कर ज़िक्र न करना। दुवम भूल कर ज़िक्र न करना। दूसरी क़िस्म में इज्मा है कि ज़बीहा हलाल है अब अगर पहली क़िस्म में भी ज़बीहा हलाल हो तो आयते शरीफ़ा मोहमल हो जाएगी और इसके तहत कोई क़िस्म भी बाक़ी न रहेगी लिहाज़ा पहले क़िस्म में ज़बीहा हराम है और उसको न खाया जाएगा। बे'ऐनेहि इसी तरह बंदा ने इस्तिदलाल में जो आयत ज़िक्र की है जिसमें मोमिन और काफ़िर हर एक की शफ़ाअत की नफ़ी है अब अह्ले सुन्नत के नज़्दीक़ मोमिन के हक़ में शफ़ाअत मक़्बूल है और आयत कुफ़्फ़ार के साथ मख़्सूस है अब अगर काफ़िर के लिए भी शफ़ाअत मक़्बूल हो तो आयत के तहत कोई क़िस्म भी दाख़िल न रहेगी। लिहाज़ा किसी काफ़िर के हक़ में शफ़ाअत मक़्बूल नहीं और चूँकि हज़रत अबू तालिब رضي الله عنه के हक़ में शफ़ाअत मक़्बूल है लिहाज़ा साबित हुआ कि वह काफ़िर न थे बल्कि मुसलमान थे।

दलीले दहुम

(10)

कुरआने पाक में है : (إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ الآيَة)

अल्लामा साहिबे "रुहुल-मआनी" फ़रमाते हैं कि 'अकसर अख़्बार से पता चलता है कि यह आयत हज़रत अबू तालिब رضي الله عنه के हक़ में नाज़िल हुई है और नीज़ इस आयते करीमा मुबारका से पता चलता है कि आँहज़रत ﷺ हज़रत अबू तालिब رضي الله عنه को महबूब जानते थे अब हज़रत अबू तालिब رضي الله عنه को सब्ब करना (बुरा-भला कहना) अलवियों की दिल-आज़ारी है। बल्कि यह भी एहतिमाल है कि इससे आँहज़रत ﷺ को ईज़ा हो लिहाज़ा हज़रत अबू तालिब رضي الله عنه के मुआमला में एहतियात लाज़िम है। इबारत मुलाहज़ा हो :

ثم انہ علی القول بعدم اسلامہ لا ینبغی سبہ والتکلم فیہ بفضول الکلام فان ذالک مما یتأذی بہ العلویون بل لا یبعد ان یکون مما یتأذی بہ النبی علیہ الصلوۃ والسلام للذی نطقت الآیۃ بناء علی ھذہ الروایات بحبہ ایاہوالاحتیاط لا یخفی علی ذی فہم۔

ख़ुलासा-ए-इबारत यह है की आयते मज़्कूरा-बाला से पता चलता है कि हज़रत अबू तालिब رضي الله عنه को आँहज़रत ﷺ महबूब जानते थे क्युँकि रिवायात से पता चलता है कि यह आयत हज़रत अबू तालिब رضي الله عنه के हक़ में नाज़िल हुई है और हज़रत अबू तालिब رضي الله عنه का इस्लाम

इख़्तिलाफ़ी है और हज़रत अबू तालिब ﵁ को मुसलमान और मोमिन कहने में किसी की दिल-आज़ारी नहीं है। अलबत्ता इस क़ौल पर कि वह मुसलमान नहीं हैं हज़रत अबू तालिब ﵁ को सब्ब और दुश्नाम है तो तमाम अलवियों की दिल-आज़ारी है और चूँकि हज़रत अबू तालिब ﵁ आँहज़रत ﷺ के महबूब हैं इसलिए उन को सब्ब (Abuse) (गाली देना या एसे अल्फ़ाज़ जो उनकी शान घटाए) और दुश्नाम (बदज़ुबानी या बद क़लामी या इल्ज़ाम तरासी या एबज़ोई या गालीगलोच देना) करने से आँहज़रत ﷺ की ईज़ा का भी एहतेमाल है लिहाज़ा सब्ब और दुश्नामी से एहतियात लाज़िम है।

अल्लामा साहिबे रूहुल-मआनी ने अलवियों की दिल-आज़ारी का ज़िक्र इस लिए किया है कि हदीस शरीफ़ में है :

(لا تؤذوا الاحياء بسب الاموات)

और चूँकि कुफ़्र बहुत बड़ी सब्ब और दुश्नाम है लिहाज़ा इससे हर ज़माना के अलवियों की दिल-आज़ारी है और यह ममनू है और रूहुल-मआनी ने आँहज़रत ﷺ की ईज़ा का एहतिमाल इस लिए ज़िक्र किया है कि क़ुरआन पाक में है :

وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ رَسُولَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ۔

और

إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللّٰهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ الآيَة۔

या'नी आँहज़रत ﷺ की ईज़ा पर वईदे शदीद है इस लिए जहाँ ईज़ा का एहतिमाल भी हो तो समझदार आदमी वहाँ भी एहतियात से काम लेगा। अलबत्ता हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ के मुता'ल्लिक़ यह कहना कि वह मोमिन और मुसलमान थे न तो इस में अलवियों की दिल-आज़ारी है और न आँहज़रत ﷺ की ईज़ा का एहतिमाल है बल्कि इस में हर दो की ख़ुशनुदी या ख़ुशनुदी का एहतिमाल है जो अम्रे मुस्तहसन है इस दलीले दहुम की ज़्यादा वज़ाहत भी की जा सकती लेकिन मुजादिलीन(तक़रार करनेवालों का) का ख़ौफ़ माने है।

दलीले याज़्दहुम
(11)

जिस तरह आँहज़्रत ﷺ के वालिदैन करीमैन رضی اللہ عنہما के इस्लाम में इख़्तिलाफ़ है और जो लोग ईमान के क़ाइल हैं उनके दो क़ौल हैं :

◈ **क़ौले अव्वल :-** वालिदैन करीमैन رضی اللہ عنہما की वफ़ात फ़ितरत पर थी और वह अपनी ज़िंदगी में मुसलमान थे और उनकी मौत ईमान पर हुई है।

◈ **क़ौले दुवम :-** वालिदैन करीमैन رضی اللہ عنہما को बाद अज़् मौत ज़िंदा किया गया और वह आँहज़्रत ﷺ के साथ ईमान लाए।

इसी तरह जो लोग अबू तालिब رضی اللہ عنہ के ईमान के क़ाइल हैं उनके भी दो क़ौल हैं :

◈ **क़ौले अव्वल :-** वह अपनी ज़िंदगी में मोमिन और मुवह्हिद(तौहीद पर ईमान रखने वाले) थे और उनका ख़ातिमा ईमान पर हुआ।

◈ **क़ौले दोम :-** हज़्रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ को बाद अज़् मौत ज़िंदा किया गया या कि ज़िंदा किया जाएगा और वह आँहज़्रत ﷺ के साथ ईमान लाए।

और येह अह्ले कश्फ़ और बाज़् उलमा-ए-ज़ाहिर का क़ौल है।

जिसको अल्लामा बरज़ंजी رحمۃ اللہ علیہ और सय्यिद अहमद दहलान رحمۃ اللہ علیہ ने ब-ई अलफ़ाज़् ज़िक्र फ़रमाया है :

ان كثيرا من اهل السنة والجماعة من بنی هاشم وغيرهم يعتقدون نجاته تبعا لما جاءفی ذالک ولما نقله الجهابذة الفخام الحقيقيون بان يتخذوا حجة للخلق لدى الملک العلام وهم الامام السبکی والامام القرطبی والامام الشعرانی رحمهم الله تعالىٰ على الدوام ان الله احيا ابا طالب وآمن بالمصطفىٰ ومات مسلما الخ.

या'नी बनी हाशिम और ग़ैर बनी हाशिम से अकसर उलमा अहले सुन्नत व जमाअत हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ की नजात का अक़ीदा रखते हैं इस लिए इसमें अख़्बार वारिद हैं इस लिए यह बड़े बड़े बुज़ुर्ग उलमा से मन्क़ूल है और यह बुज़ुर्ग उलमा अल्लाह سبحانہ وتعالیٰ के नज़दीक मख़लूक़ के लिए दलील हैं और वह बुज़ुर्ग उलमा इमाम सुबकी رحمۃ اللہ علیہ और इमाम क़ुरतुबी رحمۃ اللہ علیہ और इमाम शेरानी رحمۃ اللہ علیہ हैं।

हज़रत ख़्वाजा शैखुल ईस्लाम फरीदुल्हक़ व-अल-दिन जनाब मसऊद गंज शकर رحمۃ اللہ علیہ के मलफ़ूज़ात में भी मर्क़ूम है कि हज़रत इमाम मेंहदी علیہ السلام के ज़माना में हज़रत ईसा अला नबियिना علیہ الصلوٰۃ والسلام जब दुबारा ज़मीन पर तशरीफ लाएंगे तो उस ज़माना में हज़रत ईसा علیہ السلام एक मुर्दा को बइज़्ने खुदावंदी ज़िंदा फर्माएंगे और वह मुर्दा जनाबे मुस्तफा صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم के साथ ईमान लाएगा और ये मुर्दा हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ होंगे इस दलील पर ये एतराज़ हो सकता है कि ये ग्यारहवीं दलील पहली दलीलों के मआरिज़ है क्योंकि साबिक़ा दलाइल से ये साबित होता है कि हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ अपनी पहली ज़िंदगी में मोमिन और मुसलमान थे और गयारहवीं दलील से पता चलता है कि हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ को

मरने के बाद ज़िंदा किया गया और वह मुस्तफा ﷺ के साथ ईमान लाए तो इस एतराज़ के दो जवाब हैं :

◈ जवाबे अव्वल ◈

तमाम ग्यारह दलाइल इस बात पर दलालत करते हैं कि जिस तरह मोमिन अज़ाबे दाएमी से नजात हासिल करेंगे उसी तरह हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ को भी नजात हासिल होगी और हमारा मक़्सद नजाते अबी तालिब رضی اللہ عنہ है ख्वाह उसका सबब यह हो कि हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ अपनी पहली ज़िंदगी में मोमिन थे या कि यह सबब हो कि मौत के बाद उनको ज़िंदा किया गया और वह ईमान लाए। बहरहाल तमाम गयारह दलाइल नजाते अबी तालिब رضی اللہ عنہ और ईमाने अबी तालिब رضی اللہ عنہ में मुश्तरक हैं और यही मा-बेहिल इश्तिराक़ बंदा का मक़्सद है। इस जवाबे अव्वल को अल्लामा सय्यिद अहमद दहलान رحمۃ اللہ علیہ ने ब-ई अल्फाज़ ज़िक्र फरमाया :

ان كثيرا من العلماء المحققين وكثيرا من الاولياء العارفين ارباب الكشف قالوا بنجاة ابي طالب...

منهم القرطبي والسبكي والشعراني وخلائق كثير...

وان كان ثبوت ذالك عندهم بطريق غير الطريق الذي سلكه البرزنجي فقد اتفق معهم على القول بنجاته.

या'नी उल्मा-ए-मुहक़्क़िक़ीन और औलिया-ए-आरिफ़ीन में से अक्सर ने नजाते अबी तालिब رضی اللہ عنہ का क़ौल किया है, और उनसे क़ुरतुबी علیہ الرحمہ और सुबकी علیہ الرحمہ और शेरानी علیہ الرحمہ और बहुत मख़्लूक़ हैं।

◈ जवाबे दुवम ◈

जिस तरह अबवैन करीमैन رضی اللہ عنہما (हुज़ूर ﷺ के वालिदैन)के ईमान में तीन क़ौल हैं :

◈ **क़ौले अव्वल** :- उनकी मौत फ़ितरत पर हुई।

◈ **क़ौले दुवम** :- बाद मौत उनको ज़िंदा किया गया है और वह आँहज़रत ﷺ के साथ ईमान लाए।

◈ **क़ौले सोयम** :- उनकी मौत फितरत पर भी थी और बादे मौत उनको ज़िंदा भी किया गया और वह ईमान लाए ताकि दो फज़ीलतें उनको हासिल हों।

इसी तरह हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ के ईमान में भी तीन क़ौल हैं और बंदा ने जो दलाइल दिये हैं यह तीसरे मज़हब पर हैं या'नी पहले दस दलाइल से येह साबित करना मक़सूद है कि हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ अपनी पहली ज़िंदगी में आँहज़रत ﷺ के साथ ईमान लाए और चूँकि यह ईमान इकराह का ईमान है इसलिए ग्यारहवीं दलील से यह साबित करना है कि बाद अज़ मौत हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ को ज़िंदा किया गया और वह बिला इकराह आँहज़रत ﷺ के साथ ईमान लाए ताकि उनको दो ईमान की फ़ज़ीलत हासिल हो। ख़ुलासा येह के हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ का मुआमला वालिदैन करीमैन رضی اللہ عنہما का मुआमला है क्यूँकि आँहज़रत ﷺ के साथ हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ की मुहब्बत और शफ़क़त वालिदैन से कम नहीं है।

दलीले दुवाज़्दहुम
(12)

यह इल्ज़ामी दलील है और क़ब्ल अज़् दलील एक तमहीद बयान करना ज़रूरी है।

तमहीद

बंदा क़ब्ल-अज़ीं बयान कर चुका है कि आँहज़रत صلی اللہ علیہ وسلم के साथ अबू तालिब رضی اللہ عنہ की मुहब्बत और शफ़क़त वालिदैन से कम नहीं है इस लिए अबू तालिब رضی اللہ عنہ का मुआमला अबवैन करीमैन رضی اللہ عنہما वाला है या'नी जिस तरह अबवैन करीमैन رضی اللہ عنہما के ईमान में इख़्तिलाफ़ है उसी तरह हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ के ईमान में भी इख़्तिलाफ़ है और अला तक़दीर ईमान जितने क़ौल अबवैन करीमैन رضی اللہ عنہما के ईमान में है उतने क़ौल ही हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ के ईमान में हैं और अला तक़दीर अदमे ईमान जिस तरह उलमा-ए-किराम ने तसरीह(स्पष्टता) की है कि अबवैन करीमैन رضی اللہ عنہما के मुता'ल्लिक़ इहतियात से काम लेना लाज़मी है और कोई गुस्ताख़ाना लफ़्ज़ इस्तिमाल नहीं करना चाहिए और सब्ब दुश्नाम से एहतिराज़ लाज़िम है उसी तरह उलमा-ए-किराम ने हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ के मुता'ल्लिक़ भी तसरीह(स्पष्टता) फ़रमाई है और बंदा इसको अल्लामा साहिबे रूहुल-मआनी की इबारत से बयान कर चुका है अबवैन करीमैन رضی اللہ عنہما के मुता'ल्लिक़ उलमा की तसरीह मुलाहज़ा हो।

अल्लामा इब्ने आबिदीन शामी ने अबवैन करीमैन की नजात पर बहस करते हुए फ़रमाया :

وبالجملة كما قال بعض المحققين انه لا ينبغي ذكر هذه المسئلة الا مع مزيد الادب وليست من المسائل التي يضر جهلها او يسئلعنها في القبر او في الموقف فحفظ اللسان عنالتكلم فيها الا بخير اولى واسلم۔

या'नी बाज़ मुहक़्क़िक़ीन ने अबवैन करीमैन के ईमान के मसअले पर फ़रमाया है कि इस मसअला को अदब के साथ ज़िक्र करो और यह मसअला उन मसाइल से नहीं है कि उनका न जानना ज़रर दे और उन मसाइल से भी नहीं है कि क़ब्र या क़यामत में इसका सवाल हो पस ख़ैर इसी में है कि जब भी बात करे ज़िक्रे ख़ैर करे यहाँ तक बंदा ने अबवैन करीमैन और हज़रत अबू तालिब के दर्मियान मा-बेहिल इश्तिराक बयान किया हैं या'नी वोह अम्र जिसमें दोनों शरीक हैं अब हर दो के दर्मियान मा-बेहिल-इम्तियाज़ मुलाहज़ा हो या'नी वोह अम्र जिससे हर दो के दर्मियान फ़र्क़ ज़ाहिर होता है और वोह येह है कि सहीहैन में ऐसी अहादीस हैं जिनसे अबवैन करीमैन का मुसलमान न होना मालूम होता है। अहादीस का मज़मून मुलाहज़ा हो मुस्लिम शरीफ़ में है : (استاذنت ربي ان استغفر لا مي فلم يا ذن لی) या'नी आँहज़रत फ़रमाते हैं कि मैं ने अल्लाह से अपनी वालिदा के लिए तलबे बख़्शिश की इजाज़त मांगी पस अल्लाह ने मुझे इजाज़त न दी। इस हदीस शरीफ़ से आँहज़रत की वालिदा माजिदा का मुसलमान

न होना साबित है क्यूँकि इस्तग़्फ़ार सिर्फ़ काफ़िर के लिए नहीं होता और मुस्लिम शरीफ़ में एक और हदीस है जिसका मज़्मून यह है :

ان رجلا قال یارسول اللہ این ابی قال فی النار
فلما قفادعاہ فقال ان ابی واباک فی النار

या'नी एक आदमी ने आँहज़रत ﷺ को अर्ज़ किया कि "या रसूलल्लाह ﷺ मेरा बाप कहाँ है?" आप ﷺ ने फ़रमाया कि "आग में" पस जब उस आदमी ने पीठ फेरी तो आप ﷺ ने उसको बुलाया और फ़रमाया : "मेरा और तेरा बाप आग में हैं" इस हदीस शरीफ़ से भी वालिदे मुकर्रम رضی اللہ عنہ का मुसलमान न होना मालूम होता है।

इस तरह **फ़िक़हे अकबर** में है :

ان والدیہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ماتا علی الکفر۔

या'नी आँहज़रत ﷺ के वालिदैन की मौत कुफ़्र पर है। अलबत्ता वालदैन करीमैन رضی اللہ عنہما का मुसलमान होना इन अहादीस से साबित होता है जो कि सहीहैन में न होने के बावजूद ज़ईफ़ भी हैं लेकिन उलमा-ए-अहले सुन्नत दोनों क़िस्म की अहादीस को जमा करते हैं और वालदैन शरीफ़ैन رضی اللہ عنہما के इस्लाम के क़ाइल है बर-ख़िलाफ़ हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ के कि उनका मुसलमान होना जिन अहादीस से साबित होता है वह मुस्लिम शरीफ़ की अहादीस हैं जैसा कि क़ब्ल अर्ज़ीं गुज़र चुका है कि आँहज़रत ﷺ की बरकत से अबू तालिब رضی اللہ عنہ के अज़ाब में तख़्फ़ीफ हुई और आप ﷺ की शफ़ाअत अबू तालिब رضی اللہ عنہ के हक़ में मक़बूल होगी और तख़्फ़ीफे अज़ाब और क़ुबूले शफ़ाअत हर दो ईमान के दलाइल में से हैं यहाँ तक इस फक़ीर ने वालदैन शरीफ़ैन رضی اللہ عنہما और हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ के दर्मियान वजहे फ़र्क़ बयान की है।

यहाँ तक दलीले दुवाज़्दहुम की तमहीद ज़िक्र की गई है अब बंदादलील बयान करता है कि जो उलमा-ए-अहले सुन्नत अबवैन करीमैन ﷺ को मुसलमान मानते हैं और हज़रत अबू तालिब ﷺ को काफ़िर ख़याल करते हैं बंदा के नज़्दीक इनका यह फ़र्क़ तअज्जुब अंगेज़ है या'नी अबवैन करीमैन ﷺ का इस्लाम अहादीसे ज़ईफ़ा से साबित करते हैं और हज़रत अबू तालिब ﷺ का ईमान अहादीसे सहीहा होने के बावजूद तसलीम नहीं करते इस फ़क़ीर ने ग़ौर किया तो सिर्फ़ दो अम्र मालूम होते है :

◈ **अव्वल :**

हज़रत अबू तालिब ﷺ के ईमान पर दलाइल से लोग ना-वाक़िफ़ हैं।

◈ **दुवम :**

जब उन्होंने हज़रत अबू तालिब ﷺ पर कुफ़्र का फ़तवा लगा दिया तो इससे रुजू में वह अपनी कसरे शान समझते हैं और अपने आप को ख़ता से मुबर्रा ख़याल करते हैं हालाँकि अइम्मा-ए-मुजतहिदीन से भी ख़ता का एहतिमाल है बल्कि बाज़ अइम्मा-ए-किराम ने अपने अक़्वाल से रुजू भी किया है।

दलीले सेज़्दहुम

(13)

यह दलील बंदा के नज़्दीक कमज़ोर हैं और इसकी वजह यह है कि यह दलील अह्ले तशय्यो की है और बंदादलील के ज़िक्र के बाद बयान करेगा कि यह दलील ज़ईफ़ होने के बावजूद क्युँ ज़िक्र की गई है। दलील मुलाहज़ा हो- साहिबे रुहुल-मआनी ने अपनी मशहूर तफ्सीर में ज़िक्र फरमाया है:

ومسئلة اسلامه خلافية وحكاية اجاع المسلمين او المفسرين على ان الاية نزلت فيه لاتصح فقد ذهب الشيعة وغير واحد من مفسريهم الى اسلامه وادعوا اجماع ائمة اهل البيت على ذالک وان اكثر قصائده تشهد له بذالک الخ.

खुलासा-ए-इबारत ये है कि हज़रत अबू तालिब رضي الله عنه के इस्लाम में इख्तेलाफ है और जिन लोगों ने ये कहा है कि तमाम मुसलमान या तमाम मुफ़स्सिरीन का इज्मा है कि قَوْلِهِ تَعَالىٰ إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ الآيَة हज़रत अबू तालिब رضي الله عنه के हक़ में नाज़िल हुइ है यह कौल दुरुस्त नहीं है क्यूँकि तमाम शिया और उनके मुफ़स्सिरीन हज़रत अबू तालिब رضي الله عنه के ईमान के काइल हैं और उन्होंने ये दावा किया है कि अइम्मा-ए-अह्ले बैत عليهم السلام का अबू तालिब رضي الله عنه के ईमान पर इज्मा है और अबू तालिब رضي الله عنه के अक्सर अशआर उनके इस्लाम पर दलालत करते हैं।

रूहुल-मआनी की मज़्कुरा बाला इबारत से बंदा की दलील सिर्फ यह है कि ब कौल अहले तशय्यु हज़रत अबू तालिब ﵁ के ईमान पर अइम्मा-ए-अहले बैत ﵈ का इज्मा है और चुँकि अहले तशय्यु ने ये इज्मा नक़्ल किया है इस्लिये अहले सुन्नत के नज़्दीक ये दलील ज़ईफ है अब सवाल ये पैदा होता है कि जब ये दलील ज़ईफ थी तो बंदा ने उसको क्यों ज़िक्र किया है तो उसका जवाब ये है कि जब शिया ने इस्लामे अबू तालिब ﵁ पर अइम्मा-ए-अतहार का इज्मा नक़्ल किया है तो इस इज्मा को कुल्लीयतन बातिल करने के लिये ज़रुरी है कि अइम्मा-ए-अहले बैत ﵈ से ब-रिवायाते सहीह साबित किया जाए कि वह इस्लामे अबू तालिब ﵁ के काइल न थे लेकिन ये फकीर कामिल ततब्बो के बावजूद उसमें कामयाब नहीं हो सका, अगर कोई साहिबे इल्म इस पर मुताअला हो तो बंदाको ज़िंदगी में मुत्तला करे।

यहाँ तक तो बंदा ने हज़रत अबू तालिब ﵁ का ईमान तेरह (13) दलाइल से साबित किया है अब बंदाउन लोगों के दलाइल नक़्ल करके उनका जवाब देगा जो लोग हज़रत अबू तालिब ﵁ के इस्लाम के काइल नहीं हैं, उन लोगों के बाज़ दलाइल का जवाब मा-क़ब्ल में दिया जा चुका है लिहाज़ा बंदा यहाँ उसका इआदा नहीं करेगा।

बाब सोयम

ईमाने अबू तालिब ﵁ पर इख़्तिलाफ़ और उसके जवाबात

◈ **दलील अव्वल :**

قَوْلِهِ تَعَالیٰ إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ الآيَة

ये आयत अबू तालिब رضی اللہ عنہ के शान में नाज़िल हुई है और इस आयत से मालूम होता है कि अबू तालिब رضی اللہ عنہ मुसलमान नहीं थे।

◈ **जवाब :**

इस आयत से सिर्फ ये पता चलता है कि आँहज़रत صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم हिदायत और ईसाल इलल-मत्लूब को पैदा नहीं फरमा सकते हिदायत को पैदा करना अल्लाह جل جلالہ के इख्तेयार में है अब ये आयत सय्यिदना अबू बकर رضی اللہ عنہ और सय्यिदना फारुक़े आज़म رضی اللہ عنہ पर भी सादिक आती है क्यूँकि आँहज़रत صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم उन हर दो के इस्लाम को भी पसंद फरमाते थे और इससे ये साबित नहीं होता कि ये हर दो मुसलमान न थे बल्कि जो सहाबा भी इस्लाम लाए तो हिदायत के ख़ालिक़ आँहज़रत صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم न थे बल्कि हिदायत का खालिक अल्लाह جل جلالہ ही है, तो आयत मज़्कुरा बाला अगर तस्लीम कर ली कि हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ के हक़ में नाज़िल हुई है तो उससे सिर्फ इतना पता चलता है कि दूसरे सहाबा की तरह हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ के इस्लाम का ख़ालिक़ सिर्फ अल्लाह جل جلالہ ही है, हैरत ये है कि आयते मुबारका से अबू तालिब رضی اللہ عنہ का कुफ्र कैसे साबित होता है, यह एक कायदा है कि उमूम लफ्ज़ का एतेबार होता है खुसुस मौरिद का लिहाज़ नहीं होता तो इस क़ा'एदा के मुताबिक आँहज़रत صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم सब सहाबा के इमान को महबूब जानते थे और इस आयत से जो लोग कुफ्रे अबू तालिब رضی اللہ عنہ साबित करते थे उन पर लाज़िम आएगा कि कोइ सहाबी मुसलमान न हो नऊज़ुबिल्लाहि मिन ज़ालिक बरीन अक्लो दानिश ब बायाद गेरीस्त।

◈ **दलील दुवम :**

उल्मा-ए-अह्ले सुन्नत का अबू तालिब ﷺ के कुफ्र और अदमे इमान पर इज्मा है लिहाज़ा अबू तालिब ﷺ के इस्लाम का कौल करना खिलाफे इज्मा है।

◈ **जवाब :**

अबू तालिब ﷺ के कुफ्र पर न तो तमाम मुसलमान का इज्मा है और न ही उल्मा-ए-अह्ले सुन्नत का क्यूँकि बंदा ने रुहुल-मआनी की इबारत से साबित किया है कि तमाम मुसलमानों के इज्मा का कौल दुरुस्त नहीं है और नीज़ बंदानक़ल कर चुका है कि अल्लामा क़ुरतबी رحمة الله عليه और इमाम शेरानी رحمة الله عليه और उनके सिवा कसीर उल्मा-ए-अह्ले सुन्नत इस्लामे अबू तालिब ﷺ के काइल हैं लिहाज़ा मुसलमानों और अह्ले सुन्नत के इज्मा का दावा बातिल ठहरा।

◈ **दलील सोयम :**

मुखालिफ़ीन की यह दलील बहुत कमज़ोर और अक़्लो-दानिश से बईद है दलील मुलाहज़ा हो चुँकि बाज़ अकाबिर अह्ले सुन्नत का ये ख़्याल है कि अबू तालिब ﷺ मुसलमान नहीं हैं और इस मसअला पर उनकी तस्नीफ भी है तो हज़रत अबू तालिब ﷺ के इस्लाम पर दलाइल देना और उस पर लिखना उन अकाबिरीने अह्ले सुन्नत की गुस्ताख़ी है और इस मसअला पर उन अकाबिरीन की तहकीक आखरी तहकीक़ है जिसका खिलाफ मुत'अज़्ज़िर है।

◈ **जवाब :**

अक़ाबिरीने अह्ले सुन्नत से इख्तिलाफ दो किस्म हैं :

◈ **किस्मे अव्वल :**

"इख़्तिलाफ बिला दलील" या'नी अक़ाबिरीन ने एक मसअला को दलाइल से साबित किया है अब कोई इस मसअला से इख़्तिलाफ करता है लेकिन उसके पास कोई दलील अदिल्ला-ए-माहुदा मालुमा से नहीं है, यह किस्म इख़्तिलाफ मज़्मूम (Blame Worthy Base) (इल्ज़ाम देना) और अक़ाबिरीने अह्ले सुन्नत की गुस्ताखी है बल्कि यह इख़्तिलाफ ही नहीं बल्कि ख़िलाफे बातिल है,

◈ **किस्मे दुवम :**

"इख़्तिलाफ बा दलील" या'नी अकाबिरे अह्ले सुन्नत ने एक मसअला को मुदल्लल किया है उसके बाद कोई आदमी अकाबिरीन से इस मसला में इख़्तिलाफ करता है और इस इख़्तिलाफ पर उस आदमी के पास उसके ख्याल में राजेह दलाइल हैं। ये किस्म इख़्तिलाफे मुस्तेहसन है बल्कि वाजिब है क्यूँकि अगर एक मसअला पर किसी आदमी के पास किताब-व-सुन्नत से दलाइल हैं लेकिन वह आदमी इस मसअला की ज़िद और नक़ीज़ का अक़ीदा इस बिना पर रखता है कि बाज़ अकाबिरीन अह्ले सुन्नत इस ज़िद और नक़ीज़ का कौल करते हैं तो उस आदमी का ये अक़ीदा फासिद (खराब) और मज़्मूम है क्यूँकि उस आदमी ने शारे' जल्ले जलालहु या शारे' عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के फरमान पर बाज़ अकाबिरीन के कौल को तरजीह दी है और यह अम्र ग़ायत दर्जा मज़्मूम क़बीह (खोट होना या काबिले शर्म) है और यह एक किस्म का शिर्क है। जिस को क़ुरआन-पाक में बई अल्फाज़ बयान किया गया है :

اتَّخَذُوٓا۟ أَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ أَرْبَابًا مِّن دُونِ اللّٰهِ۔

या'नी **"उन लोगों ने अपने उल्मा और मशाएख को अल्लाह ﷻ के मुक़ाबला में रब तस्लीम कर लिया है और उनको अहकाम का इख्तियार दिया है और उनका कौल फरमाने खुदा और फरमाने रसूल के बराबर गरदाना है।"**

बंदा इस मसअला को यहाँ एक मिसाल से वाज़ेह करता है गौर फरमाएं

तमाम अह्ले सुन्नत जनाब गौसे आज़म शैख अब्दुल क़ादिर जिलानी رضی اللہ عنہ को अकाबिरीने अह्ले सुन्नत से मानते हैं और तमाम अह्ले सुन्नत हज़रत गौसे आज़म رضی اللہ عنہ के गुलाम हैं। लेकिन तमाम अहनाफ़(हनफ़ी) बेशुमार मसाइल में हज़रत गौसे आज़म رضی اللہ عنہ का खिलाफ करते हैं। क्यूँकि अहनाफ़ इमाम अबू हनीफा علیہ الرحمۃ के मुक़ल्लिद हैं और हज़रत गौसे आज़म رضی اللہ عنہ हम्बली मज़हब रखते हैं। और इमाम अबू हनीफा علیہ الرحمۃ और इमाम अहमद हम्बल علیہ الرحمۃ के दर्मियान बेशुमार मसाइल में इख्तिलाफ है और चूँकि यह इख्तिलाफ दलील पर मब्नी है इस्लिये मज़्मूम नहीं है और अहनाफ़ इस इख्तिलाफ के बावजूद हज़रत गौसे आज़म رضی اللہ عنہ के गुस्ताख नहीं हैं अगर दलील की बिना पर भी इख्तिलाफ मज़्मूम है तो फिर अहनाफ को अपना मज़हब तर्क करके हम्बली मज़हब इख्तियार करना चाहिये इसी तरह ख्वाजा गरीब नवाज़ अजमेरी علیہ الرحمۃ शाफई'युल-मज़हब हैं और अहनाफ़ दलील की बिना पर हज़रत ख्वाजा علیہ الرحمۃ का खिलाफ करते हैं तो यह मज़्मूम नहीं है।

नीज़ बंदाएक क़रीब तरीन मिसाल पेश करता है वह यह कि हज़रत सय्यिद अहमद दहलान علیہ الرحمۃ ईमान और नजाते अबू तालिब رضی اللہ عنہ के क़ाइल हैं और इस मसअला पर उनका एक रिसाला भी है जिसका नाम "**असना-अल-मतालिब फ़ी नजात अबी तालिब**" है और यह

सय्यिद अहमद दहलान رحمۃ اللہ علیہ **हज़रत मौलाना अहमद रज़ा खान साहब बरैल्वी** رحمۃ اللہ علیہ **के मशाइख में से हैं** हालाँकि आला हज़रत رحمۃ اللہ علیہ ईमाने अबू तालिब رضی اللہ عنہ के क़ाइल नहीं हैं बल्कि अदमे ईमान(यानी हजरत अबू तालिब رضی اللہ عنہ के कुफ्र पर) पर रिसाला तहरीर फरमाया है चूँकि यह इख्तिलाफ दलाइल पर मबनी है लिहाज़ा आला हज़रत رحمۃ اللہ علیہ ने अपने शैख की गुस्ताखी नहीं की है अब अगर कोई आदमी दलाइल कि बिना पर इस मसअला में आला हज़रत क़ुद्दुस सर्रहु رحمۃ اللہ علیہ से इख्तिलाफ करता है तो उसको गुस्ताख कहना पर्ले दर्जे की हमाक़त है। देखो इमाम अबु हनीफा رحمۃ اللہ علیہ का फरमान है : اذا صح الحدیث فھو مذھبی۔ या'नी **"अगर मेरे बयान-कर्दा मसअला के खिलाफ तुमको सहीह हदीस मिल जाए तो मेरे बयान-कर्दा मसअला पर अमल न करो और हदीस शरीफ पर अमल करो।"** हज़रत इमाम अबू हनीफा رحمۃ اللہ علیہ ने अपने इस कौल में चंद उमूर की तरफ इशारा फरमाया है :

◈ **अम्रे अव्वल :**

इस अक़ीदा-ए-बद का रद्द फरमाया है कि दलील की बिना पर इख्तिलाफ मज़्मूम और गुस्ताखी है,

◈ **अम्रे दुवम :**

कोई उम्मती ख्वाह कितना ही मुज्तहिद और इमाम क्यूं न हो उसको शारे' का मर्तबा नहीं दिया जा सकता।

◈ **अम्रे सोयम :**

किसी इमाम व मुज्तहिद की तहक़ीक़ आखरी तहक़ीक़ नहीं है।

यहाँ बाज़ लोग एक आमियाना जाहिलाना सवाल करते हैं बंदाइस जगह वह सवाल और उसका जवाब नक़ल करता है।

◈ **सवाल :**

तुम जो कहते हो कि दलील की बिना पर अकाबिरीन अह्ले सुन्नत से इख्तिलाफ मुस्तेहसन बल्कि वाजिब है, तो क्या अकाबिरीन को वह दलाइल मालूम न थे जिनकी बिना पर तुम अकाबिरीन से इख्तिलाफ करते हो हालाँकि अकाबिरीन का इल्म तुम से बहुत ज़्यादा था।

◈ **जवाब :**

क़ब्ल अर्ज़ी बंदा ज़िक्र कर चुका है कि अहनाफ़(हनफ़ी) हज़रात ग़ौसुल-आज़म رضی اللہ عنہ और हज़रत ख्वाजा ग़रीब नवाज़ علیہ رحمۃ اللہ से दलाइल की बिना पर इख़्तिलाफ़ करते हैं तो यहाँ भी वही सवाल होता है कि इन हर दो अकाबिरीने अह्ले सुन्नत को अहनाफ़ के दलाइल का इल्म नहीं था? और उसी तरह इमाम अबू हनीफ़ा علیہ رحمۃ اللہ ने जो फ़रमाया कि मेरे मज़हब के मुक़ाबले में हदीसे सहीह पर अमल करो यहाँ भी वही जाहिलाना ऐतेराज़ होता है कि क्या हज़रत इमाम علیہ رحمۃ اللہ को इस हदीस का इल्म नहीं था?

बाब चहारुम

ख़ातिमा

ख़ातिमा

आम-तौर पर यह क़ाएदा है कि किसी किताब या मज़्मून की वजहे तालीफ़ इब्तिदा में ज़िक्र की जाती है लेकिन मज़्कूरा बाला मज़्मून की वजहे तालीफ़ यहाँ आख़ीर में ज़िक्र की जाती है। और इसकी वजह यह है कि वजहे तालीफ़ मा-क़ब्ल पर मौक़ूफ़ है और मा क़ब्ल वजहे तालीफ़ की दलील है। वजहे तालीफ के कई वुजूह हैं।

◈ **वजहे अव्वल :**

यह एक क़ाइदा है कि मदलूल की नफ़ी से दलील की नफ़ी हो जाती है लेकिन दलील की नफ़ी से मदलूल की नफ़ी नहीं होती क्यूँकि हो सकता है कि इस मदलूल पर कोई और दलील भी हो ख़ुलासा यह है कि दलील मलजूम और मदलूल लाज़िम होता है और यह क़ाइदा है कि लाज़िम की नफ़ी से मलजूम की नफ़ी हो जाती है। लेकिन मलजूम की नफ़ी से लाज़िम की नफ़ी नहीं होती। तफ़सील कुतुबे मनतिकीया में है इस मज़्मून से बंदा का मतलब यह है कि हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ के अदमे ईमान(कुफ़्र) पर या अदमे नजात पर जो दलाइल है वोह उन दलाइल के मुक़ाबला में कमज़ोर हैं जिनसे आपका ईमान और नजात साबित होती है।

◈ **वजहे दुवम :**

बंदा क़ब्ल अज़ीं रूहुल-मआनी की इबारत नक़ल कर चुका है कि हज़रत अबू तालिब رضی اللہ عنہ को सब्ब और दुश्नाम करने में आँहज़रत صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم की ईज़ा का एहतिमाल है और आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم की ईज़ा पर क़ुरआन-मजीद

में वईदे शदीद है :

قَوْلِهِ تَعَالىٰ إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللّٰهَ وَرَسُولَهُ الآيَة

और किसी के कुफ़्र की तशहीर करना बहुत बड़ा सब्ब और दुश्नाम है इससे मुस्तन्बत होता है कि हज़रत अबू तालिब ﷺ के ईमान को साबित करने में उनकी बड़ी ताज़ीमो-तकरीम है इसमें आँहज़रत ﷺ की खुश्नूदी का एहतिमाल है।

बंदा ने यह मज़मून इस उम्मीद पर लिखा है कि जब आँहज़रत ﷺ इस फ़क़ीरे हक़ीर सरापा तक़सीर के आमाल का मुलाहज़ा फ़रमाएंगे तो हो सकता है कि यह मज़मून आप ﷺ की खुश्नूदी का बाइस हो और अल्लाह ﷻ इस फ़क़ीर के गुनाह मुआफ़ कर दे और ख़ातिमा ईमान पर हो जाए आमीन या-रब्बिल आलमीन।

◈ **वजहे सोयम :**

इस मज़मून से चौद्हवीं सदी के एक मज़मूम अक़ीदा का इब्ताल(बातिल या जूठा साबित करना) करना है कि दलील की बिना पर बाज़ अकाबिरीन से इख़्तिलाफ़ गुस्ताख़ी है और क़ुरआन-ओ-हदीस के मुक़ाबला में अकाबिरीन के क़ौल को तरजीह है। हालाँकि अकाबिरीन का अपना फ़रमान यह है कि....

اذا صح الحديث فهو مذهبى

أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ مِنْ كُلِّ طَاعِنٍ عَلَيْنَا بِسُوْءٍ أَوْ مُلِحٌّ بِبَاطِلِ

मैं परवरदिगारे आलम की पनाह चाहता हूं,
हर उस शख़्स से जो हम पर बुराई का ईल्ज़ाम लगाए,
बातिल और ना हक़ पर इसरार करें

- सय्यिदिना अबू तालिब बिन-अब्दुल मुत्तलीब رضي الله عنه

मैं कहूंगा के है मॅहरुम बड़ी ने'मत से
जो कोई दस्त-कासे ख्वाने अबू तालिब رضي الله عنه है।
बादे तॅहक़ीक़े अहादीषो रिवायात 'नसीर' !
मेरा दिल काइले ईमाने अबू तालिब رضي الله عنه है।

अज - आले रसूल, औलादे बतूल, फख्रे सादात,
नाइबे ताजदारे गोलड़ा हज़रत
पीर सय्यिद नसीरुदिन नसीर जिलानी, गोलड़वी رحمه الله

नाशिर

IMAM JAFAR SADIQ FOUNDATION
(Ahl-e-Sunnah)

Founder & Chairman :

Dr. Shahezadhusain Yasinmiya Kazi

Mugalwada, Kasba, Modasa, Arvalli-383315 (Gujarat)

Mo. 85110 21786